आर्ष विरासत

कथा काव्य संग्रह

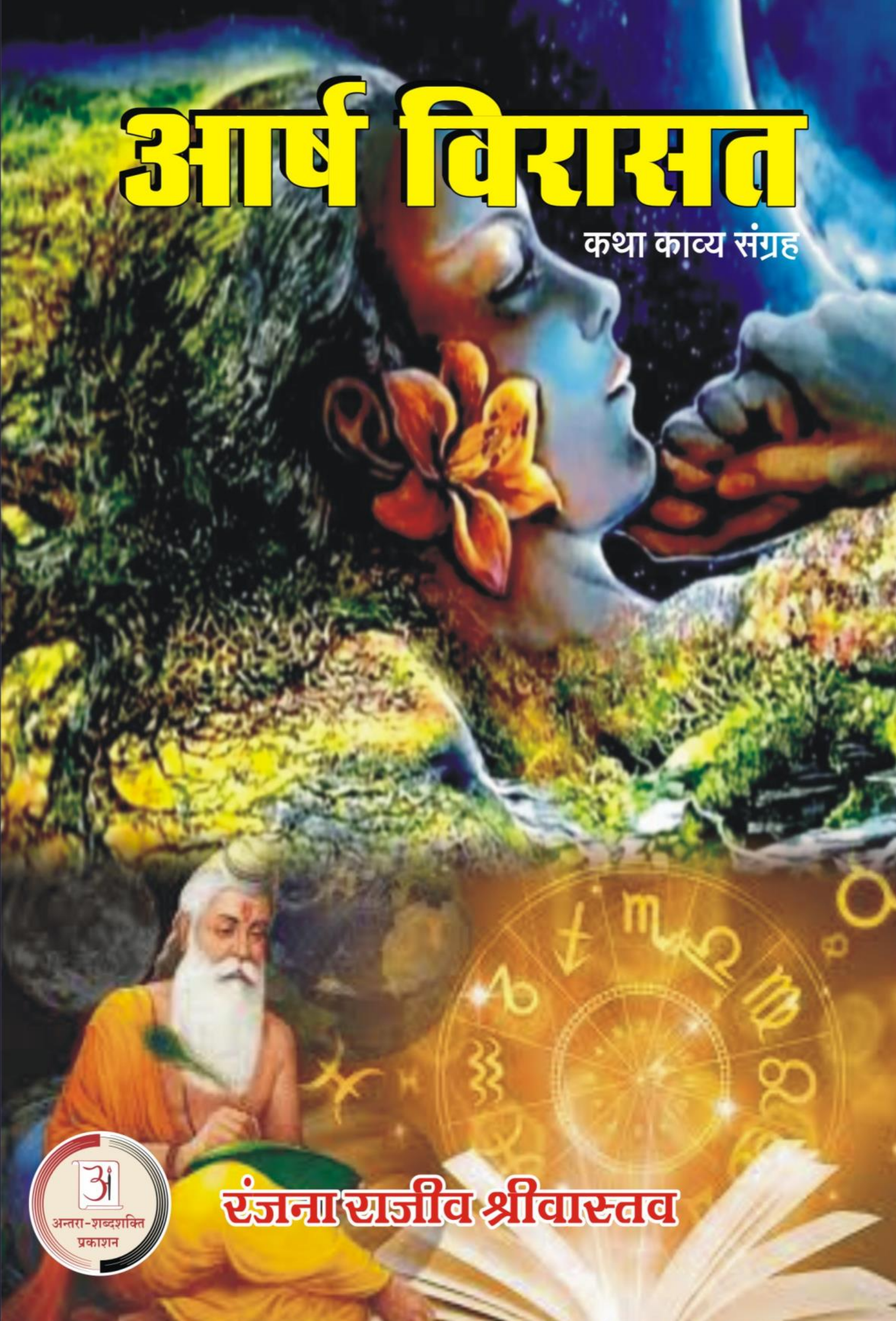

रंजना राजीव श्रीवास्तव

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आर्ष विरासत कथा काव्य संग्रह

आर्ष विरासत

(कथा काव्य संग्रह)

रंजना राजीव श्रीवास्तव

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-251-7
संपादक- प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय-- 15 नेहरू चैक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259. 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, रंजना राजीव श्रीवास्तव
मूल्य- 250.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK IS WRITTEN BY RANJANA RAJEEV SRIVASTAVA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

।। शुभं भवतु ते पन्थानम् ।।

हमारे विद्यालय की संस्कृत विभागाध्यक्ष और प्राथमिक विभाग प्रमुख, कवयित्री, लेखिका, साहित्यकार, हम सब की आदरणीय रंजना श्रीवास्तव मैडम, निरन्तर साहित्य साधना में संलग्न रहती हैं। दैनन्दिन गतिविधियों में भी प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करते हुए अपने साहित्यिक, सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करती रहती हैं। भाषा के उन्नयन हेतु उनका प्रयास सराहनीय है। आर्ष विरासत (कथा-काव्य संग्रह) की विषयवस्तु उनके आर्ष साहित्यानुराग से ओतप्रोत तो है ही, साथ ही साथ तत्त्वदर्शन विज्ञान पर भी अपनी पकड़ बनाए रखती है।

वैदिक वाङ्मय और उपनिषदों को लेकर रचा गया यह कथा-काव्य संग्रह मानव को अपनी सोच बदलने के लिए बाध्य कर देगा। अट्टालिकाओं के निर्माण के लिए मजबूत नींव का होना कितना आवश्यक है, यह इस पुस्तक का उपजीव्य है, जो इस पुस्तक के प्रत्येक इतिवृत्त में झलकता है। रंजना मैडम को संस्कृत विभाग के सभी शिक्षकों व शिक्षिकाओं की ओर से बहुत बहुत शुभकामनाएँ कि वह इसी प्रकार प्रगति पथ पर अग्रसर रहें और अपनी लेखनी से समाज को दिशा दिखाती रहें।

संस्कृत-भाषा विभाग
भवन्स बी. पी. विद्या मन्दिर,
श्रीकृष्णनगर, वाठोडा,
नागपुर- 440024

अनुक्रमणिका

1.	कल्पवृक्ष का स्वर्गारोहण	18
2.	काना कौवा	20
3.	यमराज - नचिकेता संवाद	22
4.	यमलोक के न्यायाधीश	24
5.	बृहस्पति पुत्र भारद्वाज	26
6.	मैत्रेयी और याज्ञवल्क्य	28
7.	ध्रुव का तप	30
8.	सावित्री का सतीत्व	32
9.	सती अनुसुइया	34
10.	सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र	36
11.	ऋषि गौतम और अहिल्या	38
12.	नल दमयन्ती	40
13.	कालिदास की शकुन्तला	42
14.	अपना भाग्य अपने हाथ	45
15.	आत्मसाक्षात्कार	47
16.	पञ्चकोश का विज्ञान	48
17.	डाकू बनाम वाल्मीकि	50
18.	राम केवट मिलन	52
19.	शबरी के जूठे बेर	54
20.	कैकेयी - ईश्वर की रचना	56
21.	कुब्जा उद्धार	58
22.	एकलव्य की गुरुदक्षिणा	60
23.	पुत्र मोह	61
24.	ब्रह्मास्त्र नहीं कोई खेल	62

25.	गीता का ज्ञान	64
26.	लाक्षागृह की राजनीति	66
27.	शापित चने	69
28.	संस्कारों का विधान	71
29.	कार्तिकेय जन्म	72
30.	एकदन्त	74
31.	शिव माहात्म्य	75
32.	समुद्र मन्थन	77
33.	दशावतार की अवधारणा	80
34.	विष्णु का मत्स्यावतार	81
35.	कच्छपावतार	83
36.	वाराह और जलमग्न धरा	84
37.	नृसिंह अवतार	85
38.	विष्णु वामन अवतार	87
39.	त्रेता में राम	88
40.	द्वापर में कृष्ण अवतार	89
41.	परशुराम अवतार	90
42.	बारहवीं शती के बुद्ध	92
43.	कल्कि की प्रतीक्षा	94
44.	सतयुग का नव प्रभात	95

मन की उड़ान

उगने दो एक बार आत्मविश्वास वाले पंख
आसमान नाप लेंगे छोटे दिखने वाले पंख

अपने पंखों को अब जो खोला है, तो बन्द न होने दूँगी। आहहा!! अपरिमित आनन्द की अनुभूति हो रही है। मेरे पंख खुली फिज़ाओं में उड़ान भरते जा रहे हैं, न थकते हैं, न रुकते हैं, सर सर करती हुई मीठी सी गुदगुदाती हुई हवा से बातें करते हैं, वर्षा की बूंदों के नर्म स्पर्श से रोमांचित हो उठते हैं, धरती से आसमान के अन्तिम छोर तक मानों ढलते सूरज को गन्तव्य तक पहुँचाना चाहते हैं। मौसम से बेखबर ...

बादलों के एक टुकड़े के साथ आँखमिचौली खेलती हुई मेरे विचारों की लड़ियाँ, सतयुग, त्रेता और द्वापर के अद्वितीय इतिहास को मानों जीना चाहती हैं, वैदिक काल और उपनिषद् काल की ऋषि परम्परा को इस कलियुग में साकार करना चाहती हैं। अपने सपनों की दुनिया को, भोर का सपना समझकर, पल पल प्रतीक्षा करती हैं, इस कलियुग के चलचित्र के मध्यान्तर का... उपसंहार के सुखान्त होने का....

ब्रह्मा जी के आदेश पर जैसे वाल्मीकि ऋषि ने रामायण की रचना कर डाली, उसी प्रकार एक अदृश्य शक्ति से प्रेरित होकर मुझमें भी **आर्ष विरासत (कथा काव्य संग्रह)** को रचने का साहस आ गया। आज के इस वैज्ञानिक और मशीनीकरण के युग में लुप्त होती हुई, अपने भारत की आर्ष परम्परा मानों मुझसे स्वयं कह रही हो कि........

जो चक्र अब तक उल्टा चल रहा था, उसके सीधे चलने का समय आ गया है। उठो! इस युग परिवर्तन के महायज्ञ में आहुति डालो।

सब कुछ स्वप्न सा घटित हो रहा था, किन्तु स्वप्न के अमूर्त रूप को मूर्त में परिवर्तित करने के लिए मैंने भी कलम उठा ली और श्रीगणेश कर दिया ....

वैदिक विज्ञान के घटनाक्रम को भली भाँति समझने के लिए, वेदों व उपनिषदों की गहराई में जाना, ऋषि-मुनि पूजित इस पावन भारत भूमि के इतिहास को आत्मसात करना, न जाने कैसे, कौन सी शक्ति थी, जो मुझे निरन्तर प्रेरणा देती जा रही थी। शायद मेरी माँ का आशीर्वाद?... मेरे पाठकों व मित्रों की दुआएँ? हाँ!! सच ही तो है। प्रसिद्ध साहित्यकार व कवयित्री आदरणीय इन्दिरा किसलय जी कहती हैं ----

"**रंजनाजी की आर्ष साहित्य के प्रति आसक्ति सर्वश्रुत है। उनके चिन्तन की परिधि में इसकी महक समायी रहती है**"।

इन्दिरा जी से मेरा भावनात्मक रिश्ता है। समसामयिक विषयों पर चिन्तन, चर्चा-विमर्श, लेखन व साहित्य साधना के साथ ही वर्तमान की बिगड़ती तस्वीर से मस्तक पर उभरती चिन्ता की लकीरें, मानों हम दोनों साथ साथ ही महसूस करते रहे। बिना कहे, एक दूसरे के मन की बात समझ लेना, हमारे सम्बन्ध को और गहरा, प्रगाढ़ करता गया। मेरे लेखन को उनकी सहमति मिलती रही, मुझे आगे बढ़ने का संबल मिलता रहा। मैं पंखों को और फैलाकर विस्तृत नभ में विचरण करती रही।

भवन्स भगवानदास पुरोहित विद्या मन्दिर, श्रीकृष्ण नगर, नागपुर की हिन्दी विभाग की अध्यक्ष और मेरी सहृदय, अभिन्न मित्र डॉ. संगीता ठक्कर जी कहती हैं -----

"**कवयित्री रंजना ने अन्तर्मन एवं स्वप्न के दरवाजे खोल कर अपनी कलम को उड़ने की आजादी दी है। नियमों के पिंजरे से बाहर निकालकर अभिव्यक्ति के पंछी को गगन नापने की स्वतन्त्रता दी है**"।

मित्रों का समर्थन पाकर मैं निर्भय होकर पृथ्वी से आकाश, फिर पाताल लोक तक के एक एक परिदृश्य अनुभव करते हुए आगे बढ़ती चली गई।

वारासिवनी, मध्य प्रदेश के एक छोटे शहर में जन्मा **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन,** मात्र एक नाम नहीं है, वरन् एक प्रेरक ज्योति है, जिसकी संस्थापक हैं डॉ**. प्रीति समकित सुराना जी**, जो अपने मित्रों को सदा अपनी अपनी सुषुप्त शक्तियों को जगाने के लिए प्रेरित करती रहती हैं। प्रीति जी के सौम्य एवं दूरदर्शी व्यक्तित्व व चीज़ों को परखने के दृष्टिकोण ने मुझे बहुत प्रभावित किया। साधारण होते हुए भी असाधारण हैं वह। हमारे बीच मात्र प्रकाशक और लेखिका जैसा सम्बन्ध न होते हुए, सदा एक मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहा। एक दूसरे का सम्मान करते हुए हम दोनों ने वक्ता होने के साथ साथ, एक अच्छे श्रोता के रूप में अपनी बातें कहीं और सुनीं। एक दूसरे के अस्तित्व को सहेजा।

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन के माध्यम से प्रकाशित मेरी पुस्तक **आर्ष विरासत (कथा काव्य संग्रह)** में मैंने पाठकों के समक्ष आर्ष चिन्तन प्रस्तुत करने का एक प्रयास किया है। वैदिक काल और उपनिषद् काल में घटित कथानकों को छन्दों में आवेष्टित कर काव्यात्मक चोला पहनाने का प्रयास किया है। अपने पाठकों की बौद्धिक क्षुधा के लिए हविष् रूप में इस पुस्तक में **आर्ष संसार** बसाना चाहा है। अपने मन को अपने पाठकों से जोड़ना चाहा है।

पाठकों के आशीर्वाद की प्रतीक्षा में ...

रंजना श्रीवास्तव
(कवयित्री)
9096808191

परिचय विवरण

नाम : श्रीमती रंजना श्रीवास्तव

पति : श्री राजीव श्रीवास्तव

जन्मतिथि : 27 अक्टूबर

जन्मस्थान : प्रयागराज

निवासस्थान :C-1102 जयन्ती नगरी 5, बेसा, मनीष नगर, नागपुर, महाराष्ट्र - 440034

मो. 9096808191

ई-मेल srivastavaranjana9@gmail.com

शिक्षा : एम. ए. , एल.टी. , बी. एड.

भाषा ज्ञान : हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, मराठी, उर्दू, और भोजपुरी

शैक्षणिक अनुदान : स्नातक में कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त करने के पश्चात रोवर रेंजर काउंसिल, इलाहाबाद के प्रयासों से **रामकृष्ण परमहंस आश्रम, इलाहाबाद** से तथा **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** से तीन वर्षों तक उच्च शिक्षा हेतु वार्षिक शैक्षणिक अनुदान मिला।

कार्यानुभव : 1.**सांदीपनि विद्यालय, नागपुर** में 2000 से **हिन्दी विभागाध्यक्ष** एवं **संस्कृत विभागाध्यक्ष** के रूप में कार्य किया।

2.**भवन्स भगवानदास पुरोहित विद्या मन्दिर, नागपुर** में 2005 से **संस्कृत विभागाध्यक्ष** एवं 2010 से **प्राथमिक-विभाग प्रभारी** के पद पर अब तक कार्यरत।

3.**विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन** के "अंतरंग" उपक्रम की **सह-संयोजिका**।

उपलब्धियाँ और सम्मान : 1.इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अनुबन्धित इलाहाबाद डिग्री कॉलेज से **स्नातक परीक्षा में कॉलेज में प्रथम स्थान** (1984)

2. राजकीय महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद से **एल. टी. परीक्षा में कॉलेज में प्रथम स्थान** (1987)

3.कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक से बी. एड. में **जिले में द्वितीय मेरिट** व आर्ष अध्यापक महाविद्यालय, **नागपुर में कॉलेज में प्रथम स्थान** (2007)

4.**मानव संसाधन विकास मंत्रालय** के द्वारा 2014 और 2015 में शिक्षा में अद्वितीय योगदान के लिए **प्रशंसा पत्र**
5.**केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद** के द्वारा 2011 में किशोर शिक्षण व 2017 में कक्षा प्रबन्धन की **मास्टर ट्रेनर का सम्मान**
6.भारत सरकार के **सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय** के उपक्रम **आकाशवाणी नागपुर** से "ऊर्जा संरक्षण एवं उपभोक्ताओं की जिम्मेदारी" का विभावरी चैनल से प्रसारण (2018)
7.**शब्द सुगन्ध सम्मान** (2018)
8.**केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद** के द्वारा 2019 में CBSE शिक्षक सम्मान के लिए चयनित
9.**विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन** के विभिन्न उपक्रमों में **अध्यक्षता**
10. **MLC (BJP) श्री गिरीश जी व्यास** के कार्यालय में दाधीच समाज के सम्मान समारोह में बतौर **मुख्य अतिथि** आमन्त्रण (2019)
11.भारत सरकार के **सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय** के उपक्रम **आकाशवाणी नागपुर** से "डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का व्यक्तित्व एवं कृतित्व" का उनके स्मृतिदिन के उपलक्ष्य में कामगार सभा से प्रसारण (2019)
12.**भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय** के उपक्रम **रमन विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, नागपुर** द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा के अन्तर्गत विशेष पुरस्कार से सम्मानित (2019)
13. **नव सृजन काव्य मञ्जरी सम्मान** (2019)
14. **काव्य पल्लव सम्मान** (2019)
15. **साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान** (2019)
16. **शब्द कोविद सम्मान** (2019)
17. **अंतरा शब्दशक्ति गौरव सम्मान** (2019)
18. **कलम के सिपाही सम्मान** (2020)
19. **कुण्डलिया विधा रत्न सम्मान** (2020)
20. **साहित्य साधक सम्मान** (2020)
21. **हिन्दी गौरव सम्मान** (2020)
22.**भवन्स कुलपति मुंशी सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान** 2020 के लिए चयनित

23. **लोकप्रिय रचनाकार सम्मान** (2020)
24. **भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान** (2020)
25. **साहित्य सेवी सम्मान** (2020)

प्रकाशन : 1.**नवभारत**-नागपुर-दैनिक, **निर्दलीय**-भोपाल-दैनिक, **लोकजंग**-भोपाल-दैनिक, **टाइम्स ऑफ इण्डिया** में समसामयिक लेख, व्यंग्य व कविताएँ

2.**विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन** की स्मारिका **पूर्णा** तथा **शब्द सुगन्ध** संस्था की स्मारिका में समसामयिक लेख, लघु कथा व मूल्यपरक कविताएँ

3.**सृजन बिम्ब प्रकाशन** के **वार्षिक विशेषांक** में चिन्तनपरक लेख

4.सरल प्रकाशन के तहत **महाराष्ट्र माध्यमिक शिक्षा परिषद** की कक्षा पाँचवीं की मराठी की पाठ्यपुस्तक में पाठ (2017)

5. **गीली माटी** (काव्य संग्रह) (2018)
6. **हाइकु मंथन** (साझा) (2019)
7. **अंजुली रंग भरी** (साझा काव्य संग्रह) (2019)
8. **अन्तर्नाद** (काव्य संग्रह) (2019)
9. **शाकुन्तलम्** (खण्ड काव्य) (2019)
10. **वनबाला शकुन्तला** (नाट्यरंग) (2019)
11. **शून्य और सृष्टि** - हाइकु रंग वृष्टि **(**2019)
12. **धुंध की ओर** (हाइकु : काव्य बोन्साई) (2019)
13. **चारु चिन्मय चोका** (साझा) (2019)
14. **नव पल्लव** (साझा काव्य संग्रह) (2019)
15. **आपातकाल में सृजन फुलवारी** (व्यक्तिगत काव्य संग्रह) (2020)
16.**आपातकाल में सृजन फुलवारी (2.5 KG** का साझा काव्य संग्रह) (2020)
17. **हाँ ! मैं आत्मा हूँ** (छान्दस विधा) (2020)
18. **आर्ष विरासत** (कथा-काव्य संग्रह) (2020)
19. **भाव और भाषा** (साझा) (2020)

सामाजिक कार्य :

1.आठ वर्षों तक भारत स्काउट / गाइड विद्यालय, प्रयागराज में **मोतियाबिंद निवारण शिविर** का आयोजन करवाया तथा मरीजों की नि:शुल्क सेवा की।

2. चार वर्षों तक **रोटरी इंटरनेशनल** व **यूनीसेफ** के साथ पोलियो मुक्त भारत के लिए नि:शुल्क कार्य किया। जगह जगह पर बूथ बनवाकर पंजीयन व पोलियो ड्रॉप देने की व्यवस्था करवाई।

3.**दहेज विरोधी अभियान, मुम्बई** के तहत अनेक विद्यालयों में जाकर दहेज, न लेने, न ही देने के विषय में नि:शुल्क वक्तव्य दिया।

4.**बिहार रिलीफ फण्ड** में दानराशि से बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में अपना सहयोग दिया।

5.**शान्ति भवन, नागपुर** में मतिमंद लोगों के साथ मकर संक्रान्ति के पर्व पर दैनिक व्यवहार में आने वाली वस्तुओं को देकर सहयोग किया।

6.**पंचवटी आश्रम, नागपुर** में वयोवृद्ध लोगों के दैनिक व्यवहार में आने वाले धान्य और भोज्य पदार्थो को देकर सहयोग किया।

7.संस्कृत भाषा के उत्थान के लिए, नि:शुल्क **वयस्क संस्कृत शिक्षण** पाठ्यक्रम का प्रारम्भ किया, जिसमें नागपुर के लेखाकार, डॉक्टर, व्यापारी, प्रकाशक, लेखक, छात्र, गृहणियाँ व सेवानिवृत्त संस्कृतप्रेमी सम्मिलित हुए।

8."**गीली माटी**" काव्य संग्रह रचकर, विक्रय की धनराशि (20,000/-) से स्नेहांचल वेदना उपशमन केन्द्र, नागपुर के **कैंसर पीड़ितों की आर्थिक सहायता** की।

9.**प्रधानमन्त्री राहत कोष** में दानरशि देकर **वैश्विक आपदा कोरोना** से पीड़ित व्यक्तियों की सुश्रूषा के प्रति सहयोग दिया।

****

कृति - किंजल्क

समुद्र के अंतस्तल में छिपे शंख और सीपियाँ हमें तब तक दृष्टिगत नहीं होतीं, जब तक लहरें, उन्हें तट पर उछाल न दें। किसी निर्झर की महीन मर्मर ध्वनि, गहन अरण्य के निभृत एकान्त में तभी सुनाई देती है, जब हम अपने मन के कोलाहल से स्वयं किनारा कर लें। लवणयुक्त जिह्वा से मिश्री की मिठास अनुभव नहीं की जा सकती।

आर्ष साहित्य के बारे में यही सत्य है। वेद उपनिषद् पुराणों में निहित आख्यान, अंग्रेजीदां वैचारिकी के सम्मुख तब तक अपनी महत्ता का रूपायन नहीं कर पाते, जब तक कोई आर्ष साहित्यानुरागी उन ग्रन्थों को खोलकर, उनमें निहित तत्त्वदर्शन पर प्रकाश न डाले। बस यही किया है "विदुषी रंजना श्रीवास्तव" ने। वस्तुतः वे एक "**सांस्कृतिक अभियान**" की **पुरोधा** हैं। "**चिन्तन-तीर्थों की निर्मात्री**"। आर्ष विरासत के वे 44 इतिवृत्त उन्होंने छन्दों के साँचे में ढाले हैं, जो अधिकांशतः अपठित या अज्ञात ही रहे आते हैं।

घोर अमूर्तन, वाद विवाद एवं पूर्वाग्रहों की गुंजलक में फंसे काव्य देश में पुरा कथाओं को कविता का उपजीव्य बनाना, साहस ही कहा जाएगा। जोखिम भी। जो कवयित्री ने उठाया है। 21वीं सदी की विकराल समस्या है- समय का अकाल, उसी को दृष्टिपथ में रखते हुये उन्होंने पठनीयता के संकट का हल पेश किया है। एक कथानक, एक लघु काव्यखण्ड में बसा दिया है।

प्रश्न है कि जनरूचि मिलावटी भाषा की अनुगामी है, तो वैसा लिखें या हम स्वयं भाषायी अभिजात्य को उन तक पहुंचाएँ! रंजनाजी ने दूसरा विकल्प चुना है। उनकी "**भाषा स्फटिक जैसी स्वच्छ है**", जो युगानुरूप परिवेश को साकार करने में सक्षम है।

कहना न होगा कि इन कथा प्रसंगों के पठन पाठन से उषःकाल सी ताजगी अनुभूत होती है। इनमें रमणीय विशेषणों की मंजुल, उतनी ही परुष ध्वनियाँ हैं। अनंतता के तड़ित संवेग विराट मनस्तत्त्व तक पहुँचाते हैं। आरोहमान मानदण्डों तक पहुँचने की लालसा के तहत कवयित्री ने कविता की सुनहरी देहरी पर पाँव रखे हैं। रंजनाजी

"**सूरजमुखी**" सी हैं। वे अपने खिलने के लिये आर्ष साहित्य रूपी दिनमणि से उष्मा/उर्जा पाती हैं। वे "**कुई**" हैं, चन्द्र दर्शन के बिना जिसके प्राण प्रफुल्लित नहीं होते।

ब्रह्मज्ञान की मुमुक्षा है जिन्हें, उनके लिये "नचिकेता की कथा" है। सर्वकाल सामयिक है, "लाक्षागृह की राजनीति। "काना कौआ" "शापित चने" "कल्कि की प्रतीक्षा" "कल्पवृक्ष का स्वर्गारोहण" जैसे शीर्षक पाठकीय जिज्ञासा को आकण्ठ कर जाते हैं।

पुराकथाओं को गूँथने के लिये जिस डोर और सूचिका की जरूरत है, जो भाषा शैली अभिप्रेत है, वही कवयित्री को प्रकाम्य है। **आसमां, कागद हो और किरणें, सुनहरी स्याही, तो जो भी लिखा जाएगा दिव्य ही होगा।**

भौतिकतावादी जीवन दर्शन के बरक्स पौराणिक चिन्तन को पूरी अर्थवत्ता के साथ खड़ा करना एक विप्लवी प्रयास है। कोई भी भविष्य, अतीत को जाने बिना मुकम्मल नहीं हो सकता। कथाओं को महज कल्पनाप्रसूत नहीं कहा जा सकता, वे गूढ़ार्थ समेटे हैं। यह विरासत गर्व के तन्तुओं को प्रियतर कंपन्न देगी। यह कृति, कविता से शनैः-शनैः दूर जाते जन मानस को उसके निकट लाने में सहयोग करेगी।

रंजनाजी की सृजनमाला का यह 9वां पुष्प है। हम इसे "**इस महादेश की विरासत के पुनर्स्मरण का शंखनाद कहेंगे**।"

याद आते हैं "**उदयभानु हंस**"- कहते हुए कि - "वह शक्ति है कवियों की कलम में जिससे/इस धरती को वह स्वर्ग बना सकता है!" ज्ञान और रसमयता के संगम पर अधिष्ठित यह सृजनशाला पाठकों का अविरत स्नेह संपादित करेगी, इस विश्वास के साथ -----

अनन्त शुभकामनाएँ

इन्दिरा किसलय
(कवयित्री/लेखिका)
नागपुर -27

चिरंजीवी हो उद्देश्य

प्रकृति के विषय जहाँ परिवर्तनशील एवं शाश्वत है, वहाँ जीवन का प्रभाव इसके नियम, परम्पराएँ, मूल्यबोध मान्यताएँ सभी परिवर्तनशील एवं गतिमान हैं। जीवन की परिवर्तनशीलता का अर्थ यह नहीं है कि अतीत की मान्यताओं, परम्पराओं एवं प्राचीन विरासत का हमारे बीच कोई स्थान ही नहीं है, अपितु वर्तमान की आधारशिला हमारा अतीत ही है।

भूतकाल से ज्ञान ले लो हो जिससे उत्कर्ष
भविष्य भी उज्ज्वल बने रुक जाए अपकर्ष

हमारे प्राचीन ग्रन्थ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के कोष हैं। इन महान ग्रन्थों से प्रत्येक काल के मानव ने आस्था एवं विश्वास ग्रहण किया है। आर्ष विरासत में **कवयित्री रंजना श्रीवास्तव** ने वैदिक ग्रन्थों एवं पुराणों में स्थापित आदर्श की महती आवश्यकता से प्रेरित होकर अतीत के अनुकरण पर नवीन मानवतावाद की प्रतिष्ठा की है। वह मानती हैं कि यह सृष्टि जरूर अपौरुषेय है, पर सारा वैदिक साहित्य इसके विपरीत है। सारे वेद सजीव मनुष्यों की कृतियाँ हैं। वैदिक ऋषियों से ऐसा कोई भी क्षेत्र छूटा नहीं, जिस पर वेदविद् कवियों की उच्चतर कल्पना से कोई जीवन-सत्य अत्यधिक गम्भीरता और काव्यात्मक ढंग से अभिव्यक्त होने से रह गया हो। **मदनमोहन मालवीय जी** भी इसी संस्कृति और मानवतावाद के समन्वय के पक्षधर रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा है-

"भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो सम्पूर्ण मानव के साथ तादात्म्य स्थापित करने अर्थात् 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की पवित्र भावना में निहित है"।

आज का युग विज्ञान, तर्क एवं बौद्धिकता का युग है। इस तथ्य को कवयित्री ने कभी भी अपनी नजरों से ओझल नहीं होने दिया है। इस बात से वे भली भाँति परिचित हैं कि आज का प्रबुद्ध पाठक प्रत्येक बात को बुद्धि एवं तर्क की कसौटी पर कसता है और उसी को ग्रहण करता है जो उसके अनुकूल हो। इस बात को ध्यान में रखकर **रंजना जी** ने ऐसे प्रसंगों को अपनी काव्य रचना में स्थान दिया,

जिनमें यथार्थ की अभिव्यक्ति हो, जिनसे प्राचीन पौराणिक मान्यताओं के स्वरूप में भी विकृति उत्पन्न न हो तथा जिनसे पाठक भी सन्तुष्ट हो सकें।

पौराणिक एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों के बारे में बनी धारणाओं के माध्यम से आधुनिक युगानुकूल अपनी बात कहना एक अत्यन्त चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसे सहर्ष स्वीकार कर **कवयित्री ने अपनी कलम को आर्ष विरासत के रूप में धार प्रदान की**।

मति तभी सुन्दर बने जब हों विशुद्ध विचार
व्यक्तित्व तब दमका करे जब भीतर हो निखार

भारतीय परम्परा के प्रति गहरी आस्था रखने वाली **कवयित्री रंजना जी** ने उत्कृष्ट जीवन दर्शन पर आधारित ग्रन्थों को आत्मसात कर **आर्ष विरासत** को समृद्ध किया है।

भाषा साहित्य में निहित व्याकरण में प्रत्येक साहित्यिक विधा का अपना शिल्प और उस शिल्प के कुछ तत्व होते हैं, जिनकी सहायता से कृति अपना स्वरूप ग्रहण करती है। कवयित्री ने भी अपनी शिल्प और बिम्ब की अद्भुत कला से **आर्ष विरासत** का नव सृजन किया है जिससे पाठक अवश्य अभिभूत होंगे। लेखन के प्रति रंजनाजी का उद्देश्य तीव्र ओजयुक्त अनल उद्दीपन के समान है। वह उद्देश्य चिरंजीवी हो, वर्तमान के साथ साथ इस उद्देश्य का भविष्य भी चिरायु हो, यही कामना करती हूँ। मुखमण्डल पर अग्नि सा तेज और कर्मठता का ऐसा जुनून देखकर निश्शंक कहती हूँ कि **रंजना जी** का उज्ज्वल यशस्वी भविष्य उनकी प्रतीक्षा में है और **आर्ष विरासत** सुरक्षित हाथों में है। अन्ततः मैं यही कहना चाहूँगी कि कदम रुकने न दीजिए -

अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीन आपने,
आगे अभी सारा आसमान बाकी है।

अनन्त शुभकामनाएँ,

डॉ. संगीता ठक्कर
विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
भवन्स बी. पी. विद्या मन्दिर,
श्रीकृष्णनगर, नागपुर

समर्पण

पाँव तले जमीन न खिसके, मिट्टी जकड़ कर रखती हूँ।
संस्कृति संस्कार की छाया में, अपने छात्रों को रखती हूँ।।

सार्वकालिक विशुद्ध वैदिक धारणाओं के साथ नवीन मान्यताओं का समागम ही संस्कृति और वैज्ञानिक दृष्टिकोणयुक्त सर्वाङ्गीण विकास का द्योतक है। विज्ञान यदि दृष्टिकोण है, तो आर्ष ग्रन्थ दृष्टि हैं। दृष्टि के आलोक में ही दृष्टिकोण की सत्यता या असत्यता तय होती है।

वैदिक ऋचाओं और उपनिषदीय वाङ्मय की बगिया से उठने वाली खुशबू से आज के अपने विद्यार्थियों और कल के संस्कृति के संवाहक कर्णधारों को सराबोर करने की ललक से रचा गया मेरा कथा-काव्य संग्रह- **आर्ष विरासत** अथक परिश्रम के पश्चात् मूर्तरूप ले सका। समाविष्ट एक एक कथावृत्त छन्दों की सरगम में आवेष्टित और मेरे हृदय की धड़कनों की लय, ताल में निबद्ध है। इस कथा-काव्य संग्रह की तान पर उपजे संगीत की हर एक ध्वनि और प्रतिध्वनि को **मैं अपने विद्यार्थियों को समर्पित** करती हूँ।

****

कल्पवृक्ष का स्वर्गारोहण

हिमाद्रि शिखर पर कंचनपुर राज्य जीमूतकेतु राजित
इच्छापूर्ति कल्पवृक्ष महान था महलोद्यान विराजित

पूजन अर्चन कल्पवृक्ष का करबद्ध मन्त्र आह्वान
वरदान में एक पुत्र था जन्मा उदारमना जीमूतवाहन

जीमूतवाहन युवा हुआ जैसे ही राज्याभिषेक भासित
सिंहासनासीन कुलगौरव हुआ कंचनपुर राज्य शासित

मन्त्रीगण ने राजा को तब वृक्ष का महत्त्व बताया
कल्पवृक्ष उपस्थित जब तक दारिद्र्य ने नहीं सताया

पूर्वजों ने समाज कल्याण न कोई किया अभीष्ट
परितुष्ट किया अमर पादप से आत्मोत्कर्ष ही अभीष्ट

जीवित नहीं आज स्वयं जो भोगें कल्पवृक्ष फल चक्र
स्वयं को अमर न कर सके जीवन चक्र हो गया वक्र

उत्तम होता कल्पवृक्ष से लाचारी दुःख यदि करते दूर
यश ध्वजा फैलती जाती बढ़ती कीर्ति भी भरपूर

जीमूतवाहन ने कहा राजन से अपना मन अभिप्राय
परमार्थ पूजा कल्पवृक्ष की निज स्वार्थ दिया सरकाय

पूर्वजों की हर अभिलाषा निर्विघ्न पूर्ण होती रही
परमार्थ लालसा साधु मन में नित्य प्रति जगती रही

अमरपादप! इस भूलोक पर अवशिष्ट निर्धन न रहे
दिव्य वाक् तथास्तु की गुंजित सुनकर हर्षित हो रहे

धरा से ऊपर उठता गया धन धान्य वर्षा करता गया
इस पृथ्वी पर अवशिष्ट कोई दीन हीन न रह सका

त्यक्त होकर राजोद्यान से कल्पद्रुम ने त्यागा भूलोक
उठते उठते अगले पल ही कल्पवृक्ष पहुँचा देवलोक

पृथ्वी पर इस परमार्थ से चहुँ ओर फैला राज यश
मुदित जन आशीष देते धन-धान्य पाकर हर्ष वश

जीमूतवाहन के परमार्थ से स्वार्थ कलंक मिट गया
कल्पवृक्ष मर्त्यलोक से सुरकानन जाकर बस गया

****

काना कौवा

देवेन्द्र के पुत्र के दुस्साहस की आर्ष कथा प्रसिद्ध
काग रूप में जाँचे परखे कैसे श्रीराम बल सिद्ध

ज्यों मन्दबुद्धि एक चींटी सागर थाह लेना चाहती
अभिमान वृद्धि जयन्त की अपना विनाश चाहती

मूढ़ कागा सीताचरण में चोंच मारकर उड़ गया
रक्त प्रवाह को देखकर कोप रघुनाथ का बढ़ गया

सरकंडे को अभिमन्त्रित किया तीर कमान संधान
जयन्त जीवन रक्षार्थ भागा राह में अनगिन व्यवधान

अपना असली रूप धरकर पितृधाम सहायतार्थ गया
राम का विरोधी जानकर पिता ने आश्रय नहीं दिया

ब्रह्मलोक शिवलोक में भी घोर हताशा हाथ लगी
माता मृत्यु यम लगे जनक नैराश्य ज्वाला जल उठी

निराशा से घायल हृदयतल शोक व्याकुल हो गया
जयन्त भागता फिरता रहा कहीं भी आश्रय न मिला

श्रीराम द्रोही को कौन बचाए सद्बुद्धि सबको आ गई
जयन्त की व्याकुलता पर नारद को करुणा आ गई

संत चित्त बड़ा ही कोमल भेजा जयन्त को राम शरण
तप्तमानस जयन्त ने तब शरणागत के पकड़े चरण

प्रभु! पाहि माम्! तेरी शरण हे दीनबन्धु! मैं आया हूँ
करबद्ध विनय हे दीनदयाल! मैं फल भुगतने आया हूँ

ईश्वरीय बल और प्रभुता को मैं अभागा जान न पाया
अक्षम्य पाप के फलस्वरूप ही मैंने यह दुःख पाया

प्रभाव देखने आया पहले अब स्वभाव देखने आया हूँ
मैं निकृष्ट पापी जीवनदान का विनम्र अनुरोध लाया हूँ

कृपालु श्री रघुनाथ जी ने सुनी आर्तवाणी गहन
काना करके छोड़ दिया थी कर्मफल में गहरी अगन

मृत्यु अवश्यंभावी होती तो देर न करते नाथों के नाथ
त्रिलोक परिक्रमा क्यों करवाते दीन हितकारी रघुनाथ

पितृत्यक्त मातृत्यक्त की पीड़ा कोई जैसे हो अनाथ
गर्व बह रहा था आँसुओं में जीवन डोर राम के हाथ

****

यमराज-नचिकेता संवाद

कठोपनिषद एक आर्षग्रन्थ नचिकेता संवाद वर्णित
नचिकेता वाजश्रवस का पुत्र धर्म निष्ठा बहुचर्चित

नचिकेता एक पुण्यफल कर्तव्य सिद्धिमय संकल्प
विकसित व्यक्तित्व का धनी उस जैसा नहीं विकल्प

वाजश्रवस ऋषि एक कर्मकाण्डी धर्म कर्ममय बुद्धि
पूजा पाठ विश्वजीत यज्ञ हविष आहुति से सिद्धि

कर्मकाण्ड गोदान कर रहे जब यज्ञ में हो तटस्थ
नचिकेता हैरान हुआ देखकर सारी गाएँ थीं अस्वस्थ

नचिकेता ठहरा धार्मिकता और बुद्धिमत्ता का स्वामी
जनक मोहवश सहेज रहे थे जीवन सुख आगामी

मोहभंग के हेतु पुत्र ने पिता से पूछा एक सवाल
मुझे दान में किसको देंगें? भृकुटि तन गई भाल

पिता ने इस सवाल को टाला सुत ने फिर दोहराया
बार-बार वह प्रश्न सुनकर जनक का क्रोध गहराया

आवेश में पिताश्री ने कहा तुझे यम को दान करूँगा
दृढ़प्रतिज्ञ पुत्र भी बोला दान का संकल्प पूर्ण करूँगा

मृत्यु की तलाश में नचिकेता पहुँचा यम के लोक
तीन दिवस यम द्वार पर बैठा लगी प्रवेश पर रोक

पितृभक्ति को देखकर उपजा यम के मन में उत्स
तीन दिन के कठोर तप के लिए माँगो तीन वर वत्स

विश्वास जी उठा बालक का स्वभाव धीर गम्भीर
ओजस्वी नचिकेता ने ध्यायी पिता के मन की पीर

नचिकेता ने पहले वर में अपने जनक का स्नेह माँगा
अग्निविद्या के ज्ञान विज्ञान का दूजा वर भी माँगा

तीजे वर में जताई नचिकेता ने आत्मज्ञान की मुमुक्षा
वर के बदले स्पष्ट की दु:ख से उपजने वाली परीक्षा

आत्मज्ञान के बदले ले लो भौतिक सुखों का खजाना
दृढ़प्रतिज्ञ नचिकेता ने चाहा मृत्यु के रहस्य को पाना

नकार दिया नचिकेता ने नाशवान सुख-सुविधाएँ
विवश होकर यमराज ने खोलीं मृत्यु रहस्य विधाएँ

सनातन धार्मिक ग्रन्थ में लिखित यमराज के दो प्रसंग
मृत्युराज भी विवश हो गए संकल्पित हठ धर्मसत्संग

एक प्रसंग सावित्री से सम्बन्धित सत्यवान पुनर्जीवित
दूजा प्रसंग नचिकेता की हठ वरदान धर्म सञ्चित

हठधर्मिता पर यम ने खोले दुर्लभ मृत्यु के गूढ़ रहस्य
बालयोगी को ज्ञात हुए मृत्यु-लोक से जुड़े रहस्य

****

यमलोक के न्यायाधीश

ब्रह्मा की काया से जन्मे महाशक्तिशाली चित्रगुप्त
पुराणों में मान्य धर्मराज भाग्य लेखक श्री चित्रगुप्त

पाप-पुण्य का लेखा-जोखा और मनुष्य को न्याय
कर्म अनुसार विधान रचित न्याय और अन्याय

मृत्यु पश्चात मस्तिष्क जीव का करता ऊर्जित कार्य
कर्म अनुसार स्वचालित होता पंजीयन का कार्य

गुप्त रूप से संचित होते गुप्त रूप कृत कार्य
अन्त समय में दृष्टिपटल पर अंकित न्याय के कार्य

जीवों के लोक परलोक व पुनर्जन्म के ईश अधीश
ब्रह्मा के मानस पुत्र चित्रगुप्त सत्य न्याय के ईश

स्वर्ग और नरक निर्धारण भगवान चित्रगुप्त के हाथ
महाकाल विश्वसनीय देव हैं बौद्धिक क्षमता साथ

भगवान चित्रगुप्त आर्यावर्त के कायस्थ कुल जनक
ब्रह्मा की काया से जन्मे 'कायस्थ' उपाधि कनक

कायस्थ चित्रगुप्त के वंशज बुद्धिमान और सर्वश्रेष्ठ
कायस्थ समाज पठन पाठन में रहता हरदम श्रेष्ठ

कायस्थों में कश्यप श्रीवास्तव वाल्मीकि हैं प्रधान
अस्थाना गौड़ माथुर सक्सेना सिन्हा हैं अभिमान

भटनागर वर्मा चित्रवंशी सूर्यध्वज शास्त्री जैसे लाल
खरे और पटनायक उपनाम बच्चन बात कमाल

विश्वास सरकार बासु अम्बानी दत्त चक्रवर्ती खास
आडवाणी देवगन बोस दत्ता ठाकरे सेन और दास

अम्बष्ठ निगम गुप्त व कुलश्रेष्ठ चित्रगुप्त से जात
कायस्थ समाज वंशावली वर्धन चित्रगुप्त के गात

गरूड़ पुराण में वर्णित है यमलोक और चित्रलोक
चित्रगुप्त जयन्ती का पूजन भाईदूज का आलोक

कलम-दवात के पूजन द्वारा लेखा बही का सम्मान
हवन समिधा का अर्पण अर्चन चित्रगुप्त देव प्रधान

****

बृहस्पति पुत्र - भारद्वाज

प्रयागराज के प्रथम निवासी ऋषि भारद्वाज की बान
भारद्वाज ने प्रयाग बसाया है वेद लिखित अभिमान

सर्वोच्च गुरूकुल की स्थापना जो केन्द्र ज्ञान विज्ञान
सहस्त्रों वर्षों तक विद्यार्थी को वैदिक विद्या दान

प्रयाग में भारद्वाज आश्रम आनन्दभवन के समीप
वनवास काल में राम पधारे वनवासी रूप महीप

गंगा यमुना सरस्वती के पावन संगम का माहात्म्य
अक्षयवट दर्शन की महिमा कला विज्ञान तादात्म्य

शस्त्रज्ञ राजतन्त्री विज्ञानवेत्ता तज्ञ विधि अर्थशास्त्र
मन्त्रद्रष्टा विज्ञ आयुर्वेद अभियान्त्रिकी शिक्षाशास्त्र

ऋग्वेद के छठवें मण्डल के दृष्टा ऋषि भारद्वाज
अथर्ववेद में उच्च स्थापित ऋषिकुल के सरताज

वैदिक ऋषियों में अग्रगण्य अवबोधन तत्त्वज्ञान
माता ममता पिता बृहस्पति से संस्कार संग विज्ञान

पिता से ज्ञान अम्बा से संस्कृति निर्मित उत्तम चरित्र
कला योग विज्ञान त्रिवेणी ऋषिकुल में बहे पवित्र

सावित्र्य अग्नि विद्या के संग आयुर्वेद औषधि ज्ञान
देवेन्द्र और ब्रह्मा से पाया सूक्ष्मातिसूक्ष्म विज्ञान

अग्नि को आत्मसात कर अमृततत्व किया संप्राप्त
सूर्यदेव से अपरिमित आयु बल और बुद्धि अवाप्त

श्रीहरि परिक्रमा प्रयागराज के अधिष्ठाता संस्थापक
भगवानशिव की कृपा मिली दृष्टि दृष्टिकोण व्यापक

श्रीद्वादशमाधव की परिक्रमा प्रथम परिक्रमा संसार
भारद्वाज द्वारा स्थापित थी स्थली पवित्र आगार

प्रयाग में कृत कर्मकाण्ड या स्थापित कोई मूर्ति
पाप क्षय और पुण्य उदय सभी मनोरथों की पूर्ति

अस्थिविसर्जन पिण्डदान यज्ञोपवीत का पुण्यफल
पूजा कल्पवास की साधना तीन परिक्रमा से सफल

आयुर्वेदसंहिता भारद्वाजस्मृति ग्रन्थ ऋषि लिखित
यन्त्र-सर्वस्व भारद्वाज संहिता भी भारद्वाज रचित

भारद्वाज आश्रम की उपस्थिति त्रेता का अभिमान
पुराण उपनिषद् में वर्णित ऋषिकुल-परम्परा महान

****

मैत्रेयी और याज्ञवल्क्य

त्रेतायुग में जनक दरबार में आध्यात्मिक वाद-विवाद
जम्बूद्वीप भरतखण्ड से आए सन्त ऋषि करने संवाद

वाद-विवाद बढ़ता गया और निष्कर्ष न आया हाथ
हर तर्क वितर्क कुतर्क जैसा लगे नहीं दूरदर्शिता साथ

अब दो महा शक्तियों का रहा वाद विवाद अवशिष्ट
ज्ञान योगिनी मैत्रेयी और महर्षि याज्ञवल्क्य परिशिष्ट

वाद विवाद प्रतिवाद चलता रहा स्थिति थी गम्भीर
मैत्रेयी के समक्ष बेअसर थे ऋषिवर के शब्द तीर

याज्ञवल्क्य का पौरुष आहत तीव्र अग्नि ज्वाला बनी
नारी से पराजित होकर उभरी भाल पर भृकुटी घनी

क्षुब्ध हो मैत्रेयी से बोले तत्काल जान से तू जाएगी
जिह्वा पर तेरा नियन्त्रण नहीं करनी का फल पाएगी

प्रत्यक्ष व्यावहारिक ज्ञान का महर्षि को अनुभव नहीं
साधारण से प्रश्नों ने इसीलिए विवेक को छुआ नहीं

विदुषी मैत्रेयी का सम्मान बढ़ा हुई उच्च पदासीन
ऋषि को मर्यादा का बोध हुआ अन्त:करण उदासीन

क्षमाप्रार्थी ऋषि ने फिर गुरु दीक्षा का आग्रह किया
शिष्य नहीं स्वामी बनें मैत्रेयी ने विनम्र प्रत्युत्तर दिया

मैत्रेयी ने याज्ञवल्क्य को पति रूप में स्वीकार किया
याज्ञवल्क्य सा भाया न कोई हृदय स्थान बसा लिया

याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी ने लिया परिणय का फैसला
दोनों ने परिवार बसाया वर्षों तक चला ये हौसला

कालान्तर में ऋषि ने सुनाया वानप्रस्थ का निर्णय
निर्मोही मैत्रेयी ने त्यागा निज भोग विलास का निश्चय

नश्वर सांसारिक वस्तु मोह संन्यासी को न लुभा सके
कौड़ियों से सन्तुष्ट योगी अविनाशी जीवन न पा सके

याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को जब आत्मबोध समझाया
पतिसंगिनी ने आत्मसात कर अपना कदम बढ़ाया

दोनों वन को निकल पड़े वानप्रस्थ अंगीकृत किया
सिद्ध सन्तों की भाँति अपना जीवन कृतकृत्य किया

वैदिक कालीन अध्यात्म में थी स्त्री पुरुष में समानता
सामाजिक न्यायव्यवस्था में नारी वर्चस्व की प्रधानता

****

ध्रुव का तप

सुनीति व सुरुचि दो रानियाँ राजा एक उत्तानपाद
सुनीति से ध्रुव सुरुचि से उत्तम सौतिया दाह प्रमाद

रानी सुरुचि से अधिक रहा उत्तानपाद का प्रेम
सुनीति सदा उपेक्षित रहती ज्वाला बन गई हेम

सांसारिकता से विरक्त सुनीति करती भगवद्भजन
ईश्वर को अपना नाथ बनाकर करती अर्चन पूजन

सुनीति का पुत्र ध्रुव चाहता बैठे पिता की गोद
सुरुचि ने खींचकर धिक्कारा शुष्क मन का मोद

गोद और राज सिंहासन केवल पुत्र उत्तम के भाग्य
ईश्वर की भक्ति से पाओ मेरे गर्भ का सौभाग्य

सुरुचि की कटुता से बालमन दु:ख से हुआ निराश
माँ सुनीति को पीड़ा सुनाई मन जब हुआ हताश

सौत के ऐसे व्यवहार से सुनीति का मान तिरस्कृत
ईश्वरीय सिंहासन को बताया भक्तिमार्ग से अधिकृत

क्रोध के आवेश में भी विमाता ने की उत्तम बात
पिताश्री की गोद या श्रेष्ठपद मात्र परमेश्वर के हाथ

मजबूती से थाम हाथ में जननी के वचनों की डोर
पाँच वर्ष का बालक ध्रुव चल पड़ा वन की ओर

मार्ग में मिले देवर्षि नारद बालक ने मर्म पाया
समझाने का प्रयास किया पर कोई डिगा न पाया

देवर्षि ने द्वादशाक्षर मन्त्र का बालक को ज्ञान दिया
कालिन्दीतट पर मधुबन में तपस्या का संज्ञान दिया

कैथ बेर फिर शुष्कपत्र से दो माह जिया चिरायु
तीसरे माह में उदक् ग्रहण चौथे में केवल वायु

पाँचवें माह में एक चरण पर खड़े रहे नि:श्वास
मन्त्र अधिष्ठाता वासुदेव बसे ध्रुव की हर एक श्वास

कठिन तपस्या दृढ़ प्रतिज्ञ की नियम श्वास-अवरोध
स्वत: बढ़ रहा देवलोक में देवों का श्वास गतिरोध

देवों ने बाल तप निवृत्ति की भगवान से की प्रार्थना
ध्यान मग्न हो ध्रुव करे अनन्त प्रभु तप साधना

हृदय की ज्योति अन्तर्विहित ध्रुव ने महसूस किया
शंख चक्र गदा पद्महस्त भगवान का दर्शन किया

भगवान ने बाल कपोलों को शंख से स्पर्श किया
बालक ध्रुव के मन कण्ठ में सरस्वती ने स्वर दिया

कोमल तन कठोर तप भावभीनी स्तुति का संधान
वासुदेव भगवान से मिला अविचल पद का वरदान

मृत्यु के मस्तक पर चढ़कर ध्रुव हुआ जगतप्रसिद्ध
तप के बल पर अविचल रहकर ब्रह्मधाम संसिद्ध

उत्तर नभ में ध्रुव तारा स्थिरता का प्रतीक कहाए
अनन्य तप का साक्षी ध्रुव नैतिक मूल्य समझाए

****

सावित्री का सतीत्व

महाभारत की वनपर्वकथा कथित मार्कंडेय मुनिमुख
युधिष्ठिर ध्यानमग्न सुनकर करें आत्मसात श्रुतसुख

मद्रदेश नृपति अश्वपति पुत्री सावित्री विवाह के योग्य
शाल्वदेश नृप सुत सत्यवान चयनित वर सुखभोग्य

नारद बोले अल्पायु दोष उसे नहीं विकल्प विधान
मन से स्वीकारा सावित्री ने तात! कीजिए कन्यादान

पति पत्नी के शुभ विवाह का व्यतीत हुआ एक वर्ष
सावित्री के भाग्य मात्र का अवशेष क्षणिक उत्कर्ष

सती को आभास हुआ नहीं पति स्वास्थ्य अब साथ
पति का शीश अंक में रखा धर लिया हाथ में हाथ

अजब भयानक पुरुष अवतरित लिए हाथ में पाश
यम उतरे यमलोक से आत्म पुञ्ज दक्षिण आकाश

सावित्री बोली मैं पति की छाया संग चलूँगी यमलोक
संग नहीं ले जा सकता लो यम से इच्छावर इहलोक

सावित्री ने **पहले वर में** माँगा पूज्य श्वसुर के नैन
दूजे वर में फिर माँगा पिताश्वसुर के राज्य में चैन

तीजे वर में माँगा अपने भ्राताओं का शीष अकाट्य
सती ने माँगा **चौथा वर** पति से सौ पुत्रवती सौभाग्य

अथक अनुगमन करे सती जिद्दी बनी पति के प्यार
यशस्वीपुत्रों का आशीष दे यम गए निजवचन से हार

****

सती अनुसुइया

अनुसूइया अत्रि ऋषि की पत्नी पतिव्रता विश्व विख्यात
ब्रह्माणी रूद्राणी व लक्ष्मी को बस खटक गई यह बात

सृष्टि में एक यही पतिव्रता नारद की मुक्तकण्ठ प्रशंसा
लक्ष्मी रुद्राणी ब्रह्माणी की जन्मी ईर्ष्यावश पृथक् मंशा

पतिव्रत धर्म खण्डित कराने का ज्यों ही आया कुविचार
खण्डित हो गया विचार मात्र से सर्वोत्तम नैतिक आचार

त्रिदेव ज़िद पर चिन्तित हुए पर तीनों कान्त हुए लाचार
ब्रह्मा विष्णु महेश साधु वेश में पहुँचे अत्रि के आगार

निर्वस्त्र आतिथ्य की शर्त रखी ऐसा ही भोजन स्वीकार
अतिथि दोष से भयभीत हुई शरण परमात्मा ही आधार

त्रिदेव कृपा बालरूप में बरसी आविर्भूत सती के द्वार
अबोध शिशुओं को दुग्ध पिलाकर करे मात अंगीकार

पालने में डाल झुलाती लाड़ लड़ाती अनुसुइया महतारी
वात्सल्य वर्षा में अवगाहन चूमे मुखारविन्द बारी बारी

गोदी में खेलते लोरी सुनते अनुसुइया का मन पढ़ते
ब्रह्मा विष्णु महेश किलकते बाल लीला करते करते

प्रत्यागमन जब टला देवों का देवियाँ चिन्ता से आकुल
अनुसुइया के सतीत्व की महिमा हुआ त्रिलोक व्याकुल

महर्षि अत्रि के आश्रम आकर पति की भिक्षा माँगी
ईर्ष्यावश ऐसा अपराध हुआ है क्षमा सती से माँगी

अत्रि ऋषि की कुलीन पत्नी अनुसुइया का हृदय विशाल
तीनों देवियों को क्षमा किया उत्तीर्ण सती परीक्षा काल

त्रिदेव अवतरित मौलिक स्वरूप में दमका तेज अनूप
सती को वाञ्छित वरदान मिला गर्भस्थ देव पुत्ररूप

दत्तात्रेय रूप में श्री विष्णु जन्मे और चन्द्ररूप में ब्रह्मा
दुर्वासा रूप में शिव जन्मे अनुसूइया के गर्भ की महिमा

****

सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र

हरिश्चन्द्र अयोध्या नरेश थे सत्यव्रत के सुत महान
सूर्यवंशी त्रेतायुगी नृपेश जो सत्य की पहचान

पुत्रहीन हरिश्चन्द्र माँगें एकमेव पुत्र का दान
वरुणदेव से पुत्र रोहिताश्व का मिला जन्म वरदान

लेने हरिश्चन्द्र की सत्य परीक्षा आए मुनि विश्वामित्र
स्वप्न में पाए राज्य पाठ को हक़ से माँगें विश्वामित्र

निर्मल मन से अर्पित किया स्वप्न में जो प्रण किया
सत्यवादी हरिश्चन्द्र ने क्योंकि सत्य धर्म का व्रत लिया

विश्वामित्र को राज्य सौंपा चल दिए साधुवेश महीप
वचन सर्वोत्तम धर्म माना थे सात्विक हरीश प्रदीप

विश्वामित्र ने स्मरण दिलाया पाँच सौ स्वर्ण मुद्रा दान
पत्नी व खुद को बेच दिया रखा अपने वचन का मान

हरीश को जिसने मोल लिया था श्मशान का चाण्डाल
कसौटी थी सत्य के व्रत की परीक्षा ले रहे महाकाल

कर वसूली का कार्य ही शवदाह गृह का धर्म था
कार्य था नि:स्वार्थ उनका ऐसा उत्कट मर्म था

घनघोर यामिनी में आसमान में तभी़ कड़की दामिनी
पहचान लिया तड़ित रौशनी में मुख पत्नी कामिनी

रोहिताश्व की निष्प्राण काया हुई काली सर्प दंश से
माता ने श्मशान का कर चुकाया आधे चीर अंश से

मन कमल कम्पित हो गया पर कर्तव्य पर डटे रहे
सत्य की रक्षा की खातिर हरीश अविचल अड़े रहे

बलवती थी ईश्वरीय महिमा लो प्रगट भए भगवन्ता
सत्यप्रिय हरिश्चन्द्र की देखो पौराणिक कथा अनन्ता

प्राप्त कर वर सत्यवादी अमर इतिहास में हो गए
सत्यव्रत का आदर्श बनकर उच्च स्थापित हो गए

रोहिताश्व फिर से जी उठा वरदहस्त माथे इष्टकृपा
राज्यपाठ भी पुनः मिल गया बरसी विश्वामित्र कृपा

पौराणिक शिक्षाप्रद कथा नैतिक मूल्यों की कहानी
प्रचलित थी प्राचीन कथा काव्य रंजना की ज़ुबानी

****

ऋषि गौतम और अहिल्या

ऋषि गौतम की कान्ता अहिल्या सुघड़ सुन्दर स्त्री
धर्म-कर्ममय बुद्धि विवेक ब्रह्मा की मानस पुत्री

इन्द्र देव रस लोलुप थे रंभा मेनका में लिप्त रहे
परदार परनार परकाय प्रति कामभाव अनुरक्त रहे

देवेन्द्र की वासना अवाञ्छित सती का छू न पाए मर्म
स्वामी के सिवाय कोई नहीं पति सुश्रूषा ही धर्म

अहिल्या को जब पा न सके छल प्रपंच रचा भिनसार
प्रभात पूर्व कुक्कुट रूप धरा मुर्गे की बाँग दी उच्चार

बाँग सुनकर ऋषि दम्पत्ति उठकर हुए बहुत हैरान
स्नानार्थ चल पड़े ऋषि अंतस् हड़बड़ी में परेशान

प्रतीक्षारत इन्द्र ने तत्काल गौतम का रूप बनाया
कालरात्रि अवशिष्ट अभी काम सर्प देह लिपटाया

पतिव्रता अहिल्या को पति आचरण पर आश्चर्य हुआ
आज्ञा थी शिरोधार्य पति की मौन सम्भाषण हुआ

अवगाहन काल ऋषि गौतम को नभ में दिखे सितारे
तब उन्हें यह भान हुआ अवशेष समय भिनसारे

क्षुब्ध मन से वापस लौटे पत्नी की चिन्ता अवशेष
आपतिजनक अवस्था में पाया देवेन्द्र छद्म वेष

सन्न रह गई देख पति को नाथ उग्र थे रुद्र स्वरूप
जल कमण्डल के सिंचन से इन्द्र आ गए अपने रूप

असमंजस में सती अहिल्या बिगड़ा धर्म मान के योग्य
नारी का परपुरुष स्पर्श नहीं कभी सम्मान के योग्य

श्राप दिया अहिल्या को मिथिला का परित्याग किया
हिमालय की चोटी पर जाकर शुद्धि हेतु योग किया

शिला बनी नार अहिल्या बिना शिकायत बिना विवाद
निर्दोष स्त्री दण्डित हुई पति और इन्द्र का गहन प्रमाद

दिव्यदृष्टि सम्पन्न गौतम छल को जब न समझ सके
अहिल्या एक पतिव्रता ठहरी प्रपंच कैसे समझ सके

प्रस्तर बन बैठी रही परीक्षाफल का इन्तज़ार किया
त्रेतायुग में प्रभु राम रज ने अहिल्या का उद्धार किया

हुए राम के साक्षात् दर्शन वरदान में बैकुण्ठ माँगा
दोषहन्ता वरदान और पति साथ का आशीष माँगा

पत्नी का विश्वास कहे परमेश्वर दर्शन पति के भाग्य
केवल कान्त के श्राप से जागा सोया हुआ सौभाग्य

प्रसन्न रघुवर ने सती को पतिव्रत का आशीष दिया
पाँच अमर सती कन्याओं में स्मरण का आशीष दिया

पति के श्राप की मौन स्वीकृति अहिल्या प्रशंसनीय
सती के सतीत्व की महत्ता आदर्श चरित्र अनुकरणीय

****

नल दमयन्ती

महाप्रतापी राजा नल थे गौरव पताका निषध देश
लावण्यमयी दमयन्ती जन्मी दुहिता विदर्भ नरेश

दमयन्ती जब युवा हो गई सौंदर्य रूप अभिराम
हृदय तल में छवि बस गई प्रेम चाहता प्रेम पैगाम

कामदेव से राजानल थे अश्विनीकुमार मुखमण्डल
वीरसेन सुत शस्त्र संचालन में अग्रगण्य भूमण्डल

सिद्धार्थ ने जब शरसन्धान से निरीह हंस को मारा
घायल हंस को राजा नल ने तब संकट से उबारा

राजोद्यान कमलदल सज्जित हंस मित्रों का आगार
हंस प्रेषित नल का प्रेम हुआ प्रेमिका को स्वीकार

दमयन्ती के स्वयंवर पहुँचे विदर्भ देश दिक्पाल
ऐश्वर्यमरीचिका से निष्प्रभावित वधू का उन्नतभाल

इन्द्र वरुण यम अग्नि परिणय के इच्छुक दिक्पाल
समान प्रयोजन से प्रतिभागी थे नलराज महीपाल

दमयन्ती ने दिव्य शक्ति से जाना पहचाना देखा
कुटिलदिक्पालों ने धारा था नल का रूप अनोखा

स्वयंवर वेला में दमयन्ती नहीं तनिक भी विचलित
राजकुमारों में निषध देश के नल ही हुए वाञ्छित

सुखशय्या में नल झूलते नहीं बची कोई इच्छा शेष
किन्तु तभी फुफकार उठा भ्राता पुष्कर का विद्वेष

द्यूतक्रीडा का जाल बिछ गया राज्य पाठ सब हारा
निष्काम भाव से सत्य धर्मार्थ त्यागा घर संसारा

वस्त्र फट गए जले अग्नि में कष्ट श्रापवश होए
अंजुली स्पर्श से नीर सूखता अन्न छुएँ विष होए

कठिन परीक्षा समय ले रहा राजा रानी से बोले
आहार वसन जल बिना जीवन नौका कैसे डोले

पितृगृह में लौट जाओ कोमल तन तुम राजकुमारी
कटार कटि के पास रखकर चले गहन वन अटारी

विलग हो गए राजा व रानी दुर्भिक्ष कठिन संताप
दमयन्ती लाचार वापस लौटी पिता का यश प्रताप

कलिकुपित नल दर दर भटके भोगा सर्प का दंश
कंचन काया कृष्णवर्ण हो गई पहचान हो गई भ्रंश

विदर्भ देश में दमयन्ती का फिर रचा गया स्वयंवर
कृष्णवर्ण नल को रानी ने फिर चुना था अपना वर

अमर प्रेम था नल दमयन्ती का वियोग बना संयोग
महाभारत में कथा वर्णित सत्प्रणय प्रसंग नियोग

****

कालिदास की शकुन्तला

महाभारत के आदिपर्व और पद्म पुराण में वर्णिता
अभिज्ञान शाकुन्तलम् की नायिका अरण्य पालिता

विश्वामित्र-मेनका त्यक्ता कण्व पोषिता शकुन्तला
वनमृग शाकुंतों की रक्षिका नाम मिला शकुन्तला

सौन्दर्य की मूर्ति शकुन्तला निसर्ग चलित वनवक्ता
कानन विचरणरत दुष्यन्त पर हो गई वो आसक्ता

भ्रमर कली के पवित्र प्रेम की गन्धर्व विवाह प्रथा
शापित थी शकुन्तला भूले दुष्यन्त विवाह-कथा

पतिगृह में उपेक्षिता दिखालाना चाहे राजसी मुंदरी
नियतिवश रिक्त थी अंगुली दिखी न राजसी मुंदरी

जल विहार में अभिशाप वश मुंदरी गई फिसल
तडाग में एक भीम मत्स्य ने मुख से लिया निगल

दरबार में मछुआरे ने जब राजसी मुंदरी दिखलाई
राजा को उसी समय विवाह की कथा याद आई

मारीच ऋषिपुत्र कश्यप आश्रम जन्मा था ये लाल
तेजस्विता में सूर्यसम लगता सौंदर्य कृष्ण गोपाल

माँ शकुन्तला क्षत्रिय वंशी पिता पुरुवंशी महाराज
हस्तिनापुर का गौरव था भरत भावी महाराज

विश्वामित्र व मेनका मातामह स्वर्ग समान आभ
कण्व पितामह निसर्ग पितामही सद्‌गुण का लाभ

निमन्त्रण पाकर इन्द्र का सहायतार्थ गए पुरुनरेश
दृष्टिगत कश्यप आश्रम हुआ आकाश मार्ग देवेश

शकुन्तला का पुत्र था वो प्रतापी वीर महाराजा
सिंह शावक संग कीड़ारत देश का भावी राजा

पुरुषार्थ नहीं हुंकारों में पुरुषार्थ रक्त में होता है
सिंहशावक की दंतगणना पुरुवंशी पौरुष होता है

दुष्यन्त चाहें वीर बाल को अंक भरकर चूमना
अभिमंत्रित कृष्ण सर्प गण्ड में स्वभाव था डसना

पुत्र पिता के अंक में पोखर कमलसम खिल गया
सर्पगण्ड तत्काल गिरकर शुष्क माटी मिल गया

गणिका ने शकुन्तला को विवरण निवेदित किया
शकुन्तला ने पिता पुत्र को तब सम्बोधित किया

पतझड़ में डाल पर नवीन किसलय खिल गया
जोगन की सूनी कुटिया में बिरवा फूट खिल गया

दुष्यन्त शकुन्तला पूर्वमिलन कण्व ऋषि के धाम
पुनर्मिलन राजा रानी का कश्यप ऋषि के धाम

दुष्यन्त ने ऋषि को नतमस्तक हो जोड़े हाथ
आशीष में पुत्र को माँगा संग शकुन्तला का साथ

कालिदास की शैली अनुपम रस करुण व श्रृंगार
निष्प्रयोजन प्रसंग नहीं है भविष्य का आगार

कथा धधकती अग्नि ज्वाला तो कभी अनुपमा
वैदर्भी रीति के पालन में अद्भुत कवि की उपमा

यत्र तत्र अनुकूल उद्धरण पात्रानुरूप भाव रंजना
छन्दों से अभिव्यक्त सज्जित उत्प्रेक्षा व्यञ्जना

स्वर्ग मर्त्यलोक वाञ्छित हों एक स्थान एकत्रित
विकल्प नहीं अन्य दूसरा शाकुन्तलम् ही चित्रित

नारी का दुःख असह्य शकुन्तला स्वभाव विदित
सुख-दुःख में समभाव रहें यह संदेश निहित

अभिज्ञान शाकुन्तलम् है शकुन्तला का भान
कालिदास भारत-शेक्सपियर साहित्य करे गुमान

****

अपना भाग्य अपने हाथ

परिस्थितियाँ इंसान को गढ़ें परिस्थितियों को इंसान
महान विद्वान आचार्य पाणिनि बदलें नियति विधान

बालक पाणिनि को शैशव में न स्मरण रहता अभ्यास
यत्र तत्र समय व्यतीत करें परिवर्तन की नहीं आस

गुरु की चिन्ता भाग्य रेखाओं को समझने पढ़ने लगी
पाणिनि के बाल हृदय में उत्सुकता तब जगने लगी

कौतूहल से पाणिनि पूछें हाथ में विद्या रेखा की बात
तेरे भाग्य नहीं है विद्या चिन्ताग्रस्त गुरु बोले बात

मन बहुत विचलित हुआ दृढ़ इरादों की रेखा खींच दी
कटारी उठाकर हाथ पर विद्या की रेखा खींच दी

बदला जीवन वास्तविकता में सामर्थ्यवान कर्मी बने
निरन्तर अभ्यास लगन से प्रकाण्ड पण्डित ज्ञानी बने

सामान्य जन मन के लिए पाणिनि भाग्य अविश्वसनीय
बात गले से न उतरती अव्यवहारिक व अकल्पनीय

परास्त मनोबल ने किया प्रभावशाली सूत्र की खोज
निजजीवन में अपनाकर बिगड़े भाग्य को दिया ओज

व्यावहारिक और प्रभावी सूत्र की दी मानव को भेंट
महापुरूषों ने उजागर किया व मनुज ने लिया समेट

पाणिनि ने रच डाली संस्कृतव्याकरण की अष्टाध्यायी
सिद्धान्त सारे अकाट्य लिखे जो यम नियम अनुयायी

अष्टाध्यायी आठ अध्याय चार सहस्र सूत्र का योग है
संस्कृत भाषा में व्याकरण-दान पाणिनि का प्रयोग है

अष्टाध्यायी व्याकरण ग्रन्थ नहीं है एक शैक्षिक शोध
तत्कालीन भारतीय समाज का पूर्ण चित्रण अवबोध

भौगोलिक स्थिति संग सामाजिक जीवन का चित्रण
दार्शनिक चिन्तन के साथ ही राजनैतिकता का मुद्रण

आर्थिक दशा और खान-पान की भिन्नता का वर्णन
लघु सूत्रों में संस्कृति सभ्यता इतिहास को की अर्पण

पाणिनि उत्कृष्ट विचारक सिद्धान्त की भाषा अछूती
अंग्रेजी तले जो नष्टप्राय थी वो देववाणी पुनः प्रसूती

****

आत्मसाक्षात्कार

कहोड़ऋषि के अलौकिक सुपुत्र थे अष्टावक्रमहान
अष्टांगयोग मातृगर्भ में सीखा ज्ञानी परं ब्रह्मविज्ञान

विद्वज्जन को परास्त किया शास्त्रार्थ जनकदरबार
तत्त्व वेत्ता व दूरदर्शी ने किया निज साक्षात्कार

अचंभित हो वाक्चातुर्य से पैरों पर गिर गए जनक
अष्टावक्र को गुरु मानकर विद्यार्थी बन गए जनक

चक्षु खुले जनक के पूछें मुक्ति और वैराग्य आधार
महाज्ञानी निर्लिप्त भाव से देते आत्मबोध का सार

विषय वासना को त्यागें कपटी विष बेल की तरह
क्षमा दया अस्तेय व्रत धारें अमृत रसपान की तरह

कृत्रिम शान्ति कभी न पालें परित्यागें सभी विकार
लाभहानि से दूर हो सुनें चिरंतन आत्मा की पुकार

साध्य औ साधन से दूर दु:ख व सुख में निर्विकार
रज तम से परे सत समाधि हो निर्लिप्त निर्विचार

विराटविश्व भी अस्तित्व हीन उपजा है जो काया
शुद्ध आत्मा को पहचानो अस्तित्व जिसने पाया

जन्म मरण के फेर में उलझे झूठी जिज्ञासु प्रवृत्ति
मोक्ष प्राप्त कृतकृत्य होता जिसकी सात्विक बुद्धि

****

पञ्चकोश का विज्ञान

शरीर है इन्द्रियचेतना अचेतन जगत अंश उद्वेलित
अणु अन्नरूप उत्पन्न हुआ विकसित तथैव सीमित

अन्नपूर्णा धरा में सिमटे रजोगुण देह समाहित
जन मानस की संतुष्टि **अन्नमय कोश** प्रभावित

प्राणमय कोश में प्रबल संजीवन शक्ति संपोषित
प्राण हृदय में अपान गुदा में ऊर्जा करे संयोजित

उदान समान पञ्चप्राण देह में चक्रवत् हो स्थित
क्रियारूप भावनाओं से प्राणमय कोश विस्तारित

मन व सारी ज्ञानेन्द्रियाँ **मनोमय कोश** आवेशित
मन बुद्धि व चित्त का संगम लोक त्रिदेव प्रवेशित

कल्पना से मन बुद्धि विवेचना से चित्त अंकित
इच्छाशक्ति की आपूर्ति मनोमय कोश नामांकित

विज्ञानमय कोश की सत्ता चेतन भाव प्रवाहित
उत्कृष्ट दृष्टिकोण की महत्ता ज्ञान से परिमार्जित

क्रियाकलाप में क्षमता व वृद्धि पथ होवे दिग्दर्शित
ज्ञानेन्द्रियों का पालन विज्ञानमय कोश संभावित

अन्ततः **आनन्दमय कोश** में अरिहन्त आनन्दित
आवरण रहित है परमशक्ति सृष्टि से अनुमोदित

गहरे अंतस् में जो उतरा ब्रह्मद्वार मनोवाञ्छित
बोध जाग्रत **कुण्डलिनी** आनन्दमय कोश पूजित

कोश जागरण से प्राप्त करें उच्चस्तरीय पदयोग
सूक्ष्मसंवेदना की परिणति कहलाती **भक्तियोग**

भक्ति योग से केन्द्रित होती अनन्त यात्रा परमधाम
परमानन्द परम श्रद्धा से मिलता सर्वोच्च ब्रह्मधाम

विचार तरंगों की परिणति है श्रेष्ठ **ज्ञान संयोग**
पूर्ण क्रियान्वयन की परिणति है सर्वश्रेष्ठ **कर्मयोग**

****

डाकू बनाम वाल्मीकि

एक राज्य में एक खूंखार दस्यु भय व्याप्त सदा रहे
दस्यु का नाम रत्नाकर लूट हत्या दुष्कर्म करे

कुकर्म अधर्मरत रहा सदा कर्म यात्रियों को लूटना
विरोध करते मानवों को निर्दयता निर्ममता से पीटना

नारदमुनि एक बार वन में ईश्वरजाप करते जा रहे थे
घनी विपरीत दिशा में तब संकट में जन दिख रहे थे

देवर्षि को कारण बताया है मार्ग में दस्यु अज्ञात
नारद निडर बढ़ते ही गए स्वेदकण मस्तक न गात

नहीं मानता मेरे अतिरिक्त अरण्य में भय का कारण
किसी और के होने का भय स्वयं ही नहीं अकारण

दस्यु रत्नाकर आ पहुँचा अपने दल बल के साथ
भय उत्पन्न किया हुँकारा दिया परिचय गर्व के साथ

नारद मुस्काए अज्ञानता पर अतिथि निर्भय होता है
प्राण असफलता व भविष्य से चिंतामुक्त होता है

घबराकर रत्नाकर ठहरा एक पल मन में डर लगा
ब्रह्मज्ञानी नारद हँसे पापी को पाप से डर लगा

तेरी बातों से भ्रमित नहीं मैं निर्भय होकर फिरा करूँ
न पाप पुण्य न राजदण्ड न देव विधान से ही डरूँ

राजद्रोह किया मैंने साथ ही ये सामाजिक विद्रोह है
इस बीहड़ वन में रहता हूँ ये मेरा प्रतिशोध है

उकसाने पर तेरा वध कर दूँगा पाप पुण्य न रोपो
ताकतवर सदा सुरक्षित कमजोरों पर नियम न थोपो

कपट अनीति अधर्म से होता राज्य विस्तार है देखा
हत्या छल बल से होता वाणिज्य विस्तार है देखा

पापी नहीं मैं सैनिक था निर्दयी सौदागरों से रक्षा की
विधवाओं से पशुता वाले पशु सैनिकों की हत्या की

तुम्हारे साथी पत्नी पुत्र भी क्या पाप में भागीदार हैं?
हाँ, क्यों नहीं? सब सुख दुःख पाप में एक समान हैं

नारद को बाँधा रस्सी से और पत्नी से की दरकार
क्या लूटमार और पाप कर्म में हो मेरी भागीदार?

पत्नी ने इनकार कर दिया परपाप में भागीदार नहीं
वृद्ध पिता ने भी दोहराया मैं पाप में हिस्सेदार नहीं

क्षुब्ध मन से निराश हो देवर्षि के चरणों में गिर पड़ा
क्षमा कर दो पाप पथ में अब मैं अकेला ही खड़ा

पुरुषार्थ की कलम में स्वर्णिम भविष्य की मसि भरो
राम राम न कह सको तो मरा मरा से प्रारम्भ करो

डाकू रत्नाकर का जीवन पूर्णतः अब बदल गया
पाप के पथ को त्यागकर पुण्य मार्ग पर चल दिया

कठिन तप व साधना से रत्नाकर एक आदर्श बना
रत्नाकर रामायण का प्रणेता महर्षि वाल्मीकि बना

****

राम केवट मिलन

वनवास काल में गंगा तट पर लखन संग सियाराम
शृंगीऋषि के आश्रम आए श्रृंगवेरपुर जिनका धाम

श्रृंगवेरपुर में निषाद केवट पार उतराई था काम
प्रतीक्षारत था जन्मान्तर से आएँगे शुभ दिन श्रीराम

समय आ गया चिर प्रतीक्षित सम्मुख खड़े थे राम
अविश्वसनीय पल नैन पथराए शब्द हो गए मौन

करबद्ध प्रभु करें निवेदन केवट गंगा पार कराओ
पत्नी सीता लक्ष्मण संग हमें प्रयागराज पहुँचाओ

केवट पशोपेश में बोला काष्ठमयी छोटी सी नाव
चरणरज की महिमा है भारी चमत्कारी तेरे पाँव

छू चरणरज जी उठी थी ऋषि पत्नी अहिल्या नारी
स्पर्श से जाने क्या बनेगी यह काठ की नैया बेचारी

जादू हाथों में भी इनके केवट सुत ने बात को मोड़ा
मिथिला में श्री राम ने भारी शिव पिनाक को तोड़ा

मैं गरीब नौकापालन से पालूँ अपना सारा परिवार
यही जीविका का साधन ही एकमात्र मेरा रोजगार

कहता हूँ तुमसे परमेश्वर यदि बात मानो तो बैठाऊँ
तुम ठहरे नार निर्माता चरण धो करके धूलि रमाऊँ

राम रघुवंशी कहें हे केवट! बात तुम्हारी है स्वीकार
अपनी शर्तों पर निषाद जी मंदाकिनी करा दो पार

धन अर्जन नाविक का धर्म क्या लोगे केवट उतराई
रिक्तहस्त वनवास को आया है पास नहीं एक पाई

मैं निर्धन साधारण सा नाविक भक्ति प्रभु में अपार
पार उतराई के बदले में कर दो जीवन मृत्यु के पार

कहता हूँ तुमसे परमेश्वर जब मैं आऊँ तेरे द्वार
तार देना मुझ निषाद को करना भवसागर से पार

भक्तवत्सल प्रभु कमलनयन गदगद भाव विभोर
भक्त की हठ शीश झुकाकर सुनते कमल किशोर

****

शबरी के जूठे बेर

एक भीलनी का नाम श्रमणा निसदिन राम में आसक्त
भगवान को बेर का नैवेद्य कराती ममता प्रवाहित रक्त

भील समुदाय की शबर जाति से जुड़े धर्म और कर्म
कालान्तर में कहलाई शबरी भक्ति पथ का जाने मर्म

तात प्रमुख थे भील जाति के पशुबलि प्रचलित प्रथा
श्रमणा देख आहत हुई पाशविक परम्परा और प्रथा

जाने कितनों की बलि चढ़ी अवशिष्ट की जान जाएगी
निर्दोष जीवों का वध करके प्रथा कुप्रथा कहलाएगी

प्रभु भक्ति एकमात्र सहारा मन तक भाव तरंगें पहुँचीं
मनोबल से घर त्याग दिया दण्डकारण्य जा पहुँची

दण्डकारण्य में तपस्यारत थे महर्षि मतंग एक शरण
भीलनी ने अस्पृश्यता के कारण स्पर्श न किए चरण

अपने मन को बाँटे किससे श्रमणा को पढ़ता कौन
करती आश्रम की स्वच्छता नैन झुकाकर रहती मौन

काँकर-पाथर चुने बुहारे प्रभुपद गमन होवे आसान
अविरत प्रतीक्षा पहुँचे रघुवर तक भक्ति भाव का भान

कर्मयोगिनी कर्मरत रही भक्ति एकमेव अभिलाषा
तन-मन सेवा में निमग्न रहा बोले नयन की भाषा

भीलनी की नि:स्वार्थ सेवा से ऋषि मतंग हुए प्रसन्न
अपनी शरण लिया शबरी को जो प्रभु प्रेम आपन्न

प्रयाण समय मतंगऋषि ने शबरी को आशा बंधवाई
वनवासकाल में प्रभु आएँगे करना राम की अगुवाई

अनन्त की यात्रा वरण नैन पथराए प्रभु प्रतीक्षा में
द्वार पर मंगलचिह्न सजाती भक्ति की तीव्र तितीक्षा में

मीठे बेर सत्कार हेतु लाकर चखकर रखती जाती थी
बरस बीते बाट जोहते उम्मीद साथ छोड़ती जाती थी

गुरुवचन पाषाण रेखा विश्वास यदा कदा धुंधलाता है
तूफ़ानों से कब हारा पंछी फिर फिर नीड़ बनाता है

अन्ततः शबरी की खोज में आए सजीले दो रघुनन्दन
करुणानिधि रघुवीर निहारे सजल नयन मुख क्रन्दन

पैर पखारकर लीं बलाएँ पर्णकुटी तक राम को लाई
मीठे बेर खिलाए चख चख उर प्रफुल्लित शबरीमाई

प्रीतिभोज का स्वाद लेकर बेर अमृत तुल्य बताया
अनुज न समझा भक्ति की शक्ति कटि में बेर छुपाया

फलस्वरूप लक्ष्मण की मूर्च्छा वार मेघनाद का बाण
जूठे बेर अमृत की बूटी बनी संजीवनी औषधि प्राण

भौतिकजगत से मुक्त हो गई नारायण दर्शन से शबरी
जीवन नौका पार लग गई छूटी पाप पुण्य की गठरी

माता शबरी की दिव्य कथा भक्ति की चरम पराकाष्ठा
त्रेतायुगी समाज व्यवस्था न ऊँच नीच न भिन्न प्रतिष्ठा

****

कैकेयी - ईश्वर की रचना

स्वयंभू ईश्वर की कृपा नियन्ता की सृष्टि कैकेयी
महान कार्य को गढ़े विधि निमित्त बनी थी कैकेयी

काल गति और दैव द्वारा पूर्व नियोजित कैकेयी
हानि लाभ जीवन मरण निष्प्रभावित रही कैकेयी

रथ की घुरी बन जाती देवासुर संग्राम में कैकेयी
युद्ध पर्यन्त सलामत रखती दशरथ का रथ कैकेयी

कवच पर सैकड़ों शूल सहती लड़ती रानी कैकेयी
शत्रुओं को धूल चटाती वीरांगना वीरजननी कैकेयी

स्वयं अग्नि में जलकर जन कल्याण करती कैकेयी
निजसुहाग को विस्मृत कर सुहागदान देती कैकेयी

वनवास का कलंक सहती ईश्वर की रचना कैकेयी
उपेक्षा के तीर सहती कुल घातिनी बनी कैकेयी

राम बने आदर्श जननायक पृष्ठभूमि थी कैकेयी
अपयश का हलाहल पी शिवत्व प्राप्त थी कैकेयी

पुरुष के अहं वर्चस्व का भ्रमजाल तोड़ती कैकेयी
स्त्री के अलग रूप को प्रतिध्वनित करती कैकेयी

रघुकुल को प्रताड़ना से बचाती निंदा सहती कैकेयी
समाज की सोच बदलती नये प्रतिमान रच कैकेयी

रामायण रामचरितमानस की उपेक्षित नारी कैकेयी
रामचरित्र कलुष से बचाने का एक प्रयास कैकेयी

एकान्तवासी ग्लानियुक्ता कोपभवनवासी कैकेयी
भौतिक लिप्सा से आकर्षित सामान्य स्त्री कैकेयी

कुल्टा कलंकिनी कुलघातिनी से सम्बोधित कैकेयी
वाल्मीकि और तुलसीकृत एक परिकल्पना कैकेयी

एक नारीरूप को नित प्रतिध्वनित करती कैकेयी
रामावतार को समझाने हेतु अवतरित हुई कैकेयी

स्वयं निन्दनीय बन ताने सहती कल्याणरत कैकेयी
जनमानस की रक्षा के प्रति कटिबद्ध रहती कैकेयी

कलंक निजमाथे ले राम को आदर्श बनाती कैकेयी
एक मनोवैज्ञानिक जैसी विश्लेषक रानी कैकेयी

घटना पूर्व लिखित नियोजित कारक मात्र कैकेयी
स्वार्थ छोड़ परार्थ अपनाती कोई न समझे कैकेयी

****

कुब्जा उद्धार

कंस की मथुरा नगरी में एक स्त्री थी कुब्जा
चन्दन फूल व कण्ठहार राजन को देने का जज़्बा

कंस हुआ प्रसन्न देखकर कुब्जा का सेवा भाव
नित्य प्रतिदिन का नियम बना वृद्धा सरल स्वभाव

भगवान श्रीकृष्ण मथुरा आए कंस वध था उद्देश्य
उनका प्रथम साक्षात्कार हुआ कुब्जा से सोद्देश्य

कुब्जा नाम से जानी जाती वह कुबड़ी तपस्विनी
अंग प्रत्यंग प्रेम की गंगा भक्ति सिन्धु सम योगिनी

श्रीकृष्ण ने देखा हाथ में उसके चन्दन फूल व हार
उत्साहित होकर चली जा रही राजा के दरबार

कृष्ण ने वृद्धा से पूछा उसकी प्रसन्नता का कारण
परिचय क्या है? और क्या है इठलाने का कारण?

दासी मैं, लाती चंदनपुष्पहार राजा करते अंगीकार
तिलक कण्ठहार से होता प्रतिदिन राजा का श्रृंगार

चंदन तिलक हमें लगा दो हमें भी उपकृत कर दो
सामान्य नर समझकर ये पुष्पहार अधिकृत कर दो

कुब्जा ने इंकार किया लाई महाराज कंस के नाम
अन्य किसी को नहीं समर्पित दण्डनीय यह काम

परमेश्वर खड़े विनम्रता से रह रहकर आग्रह करें
मन्दस्मित श्रीकृष्ण देखें वह नहीं-नहीं की रट करे

भाग्यशाली इस अवसर को अपने हाथों गँवा रही
जीवन का यह सुखद क्षण कंस भक्ति में गँवा रही

भगवान कृष्ण ज़िद पर अड़े बार-बार आग्रह करें
प्रभु लीला से कुब्जा अब उनका साज श्रृंगार करे

कूबड़ के कारण प्रभु के माथे तिलक नहीं लगाया
पैरों को थोड़ा दबा प्रभु ने हनु को ऊपर उठाया

तत्क्षण कूबड़ दूर हो गया कृष्ण को टीका किया
वृद्धा का आतिथ्य स्वीकृत प्रेम से आमन्त्रित किया

कालान्तर में प्रभु ने दिखाईं कुब्जा संग प्रेम लीला
वैकुण्ठ की अधिकारी बनी जन्मी शबर कबीला

चिरकाल तक होती रही प्रभु की आनन्द-क्रीड़ा
भगवान स्वयं आकर हर लेते अपने भक्त की पीड़ा

****

एकलव्य की गुरुदक्षिणा

निषादराज सुत एकलव्य का जीवन में एक ही ध्येय
गुरु द्रोणाचार्य से शिक्षा प्राप्ति धनुर्विद्या ज्ञान प्रमेय

राजवंशी वीर नहीं था वह द्रोणाचार्य ने किया इंकार
एकलव्य अबोध न जान सका गुरु का यह व्यवहार

निर्मित की माटी से उसने द्रोणाचार्य की प्रतिमा
धनुर्विद्या का अभ्यास किया गुरु मानकर अणिमा

गुरु द्रोणाचार्य संग वन आए राजकुमार राजवंशी
धनुरभ्यास में मग्न था वह हिरण्यसुत निषाद वंशी

श्वान की ध्वनि से बाधित एकलव्य का अभ्यास
बाणों की वर्षा झरने लगी कुक्कुर मुख निर्यास

द्रोणाचार्य व राजकुमारों ने देखा अद्भुत सा यह दृश्य
धनुर्धर को ढूँढने लगे गुरु और शिष्य विमृश्य

एकलव्य से द्रोणाचार्य ने पूछा महान गुरु का नाम
एकलव्य की अभ्यास साधना प्रतिमा का सम्मान

द्रोणाचार्य ने तब गुरुदक्षिणा में माँगा दाहिना अंगूठा
द्रोणाचार्य को अर्पित किया एकलव्य ने हस्त अंगूठा

लेशमात्र भी शिकन नहीं मस्तक झुका गुरु के चरण
इतिहास में अमर हो गया वीर एकलव्य का आचरण

****

पुत्र मोह

हस्तिनापुर नरेश धृतराष्ट्र को जन्म से दृष्टि नहीं
ज्येष्ठ पुत्र होते हुए भी राजा पद के योग्य नहीं

पाण्डु अनुज भी वनवासी हुए गंभीर रोग से ग्रस्त
सिंहासन रिक्त नहीं रहा प्रतिनिधि धृतराष्ट्र अपत्रस्त

धृतराष्ट्र की अतिमहत्वाकांक्षा सुख स्वाद ले-ले बढ़ी
हस्तिनापुर दुर्योधन को मिले यही लालसा सिर चढ़ी

दुर्योधन के हृदय घृणा समायी पाण्डवों से थी जलन
षड्यन्त्र से अनिष्ट करता कुत्सित चेष्टा चाल चलन

भीम को भोजन में विष दिया नदी में डुबाना चाहा
लाक्षाग्रह में पाण्डु पुत्रों को जीवित जलाना चाहा

चीर हरण और द्यूत क्रीडा कपट के सारे खेल
पाण्डवों को वनवास भेजा कुत्सित मित्रों से मेल

पाप का घट भर गया था अन्ततः हुआ धर्म युद्ध
अतिलोभी धृतराष्ट्र का कुटुंब काल कवलित युद्ध

लालसा की बलिवेदी पर किया सब पुत्रों को अर्पण
धृतराष्ट्र ने युद्ध समाप्ति पर किया वंश का तर्पण

लालच और अति महत्वाकांक्षा से तय है महाविनाश
पछतावे का भी अवसर नहीं समूल कुटुम्ब का नाश

****

ब्रह्मास्त्र नहीं कोई खेल

अठारह दिन तक महाभारत युद्ध अविरत चलता रहा
कौरव पाण्डव युद्ध में द्रोणपुत्र अश्वत्थामा जलता रहा

अश्वत्थामा ने अर्जुन पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया
शिव-प्रदत्त पाशुपत अस्त्र का अर्जुन ने संधान किया

ब्रह्मास्त्र से ब्रह्मास्त्र निवारण सटीक उद्देश्य रखे पार्थ
पाण्डवों का समूल नाश सोच दौणि की विरुद्ध पार्थ

गर्भवती उत्तरा पर भी वार किया वंशनाश का प्रयास
स्त्रियों के गर्भों को नष्ट करना अश्वत्थामा का आयास

श्रीकृष्ण ने आश्वासन दिया बालक का जन्म अटल
होगा पुत्र परीक्षित नामक भविष्य दिखे मेरे नेत्रपटल

यदि शस्त्र-प्रयोग से जन्मा मृत तो जीवनदान करूँगा
धरती का सम्राट बनेगा भ्रूण का रक्षण स्वयं करूँगा

नीच अश्वत्थामा इन वधों का पाप ढोता रहेगा जीवित
निर्जन स्थानों में फिरेगा तीन हज़ार वर्षों तक शापित

निस्सृत रक्त की दुर्गंध सदैव विक्षिप्त शरीर से होगी
अनेक रोगों से पीड़ित रहेगा यातना कष्टदायक होगी

अश्वत्थामा की सामर्थ्य न्यूनता अस्त्र मात्र संहार करे
नारद व व्यास कथन से पार्थ ब्रह्मास्त्र उपसंहार करे

व्यास करें कृष्ण अनुमोदन चाहता द्रोणपुत्र अमरता
ऋषियों-मुनियों का लाभ चाहता देवों जैसी सुन्दरता

अश्वत्थामा के माथे पर थी जन्मजात बहुमूल्य मणि
व्याधि देवास्त्र दानव से रक्षा समक्ष चाहे इन्द्र फणि

वही मणि द्रौपदी ने चाही बंधु बांधवों का रक्त हिसाब
सहर्ष स्वीकार कर लिया अमरता की ललक आब

न मणि रही न स्वास्थ्य रहा रोगी धरती पर भटक रहा
प्रभु की माया प्रभु ही जानें अमरत्व पाकर भटक रहा

अश्वत्थामा आज भी जीवित घर घर भिक्षा माँग रहा
जीवन के बदले में चिरजीवी प्रभु से मृत्यु माँग रहा

****

गीता का ज्ञान

एकादश उपनिषदों का समाहित संज्ञान
गीता सारांश निहित जीवन का उत्थान

कुरुक्षेत्र में पार्थ को नहीं धर्म का भान
सामने बन्धु बान्धव खड़े अंतस् परेशान

मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी माधव वरदान
अष्टादश अध्याय में सप्तशत श्लोकगान

अर्जुन विषाद योग में मन:स्थिति सामगान
प्रश्न विचारे पार्थ यदि उत्तर दें भगवान

सांख्य योग निष्पत्ति है तत्त्वज्ञता का ज्ञान
कर्म ही अधिकार है कर्मफल अध: ढ़लान

धर्म का रक्षण यही विनाश अधर्म का जान
भक्ति युक्त कर्म है सन्यास योग विज्ञान

भगवद्ज्ञान योग है ईश आसक्ति मान
भगवद्प्राप्ति योग ही ब्रह्म जगत वितान

परमगुह्य ज्ञान से ही क्लेशमुक्त निर्वाण
अजन्मा अनादि है अनन्त श्री भगवान

विराट ब्रह्म स्वरूप से भंग मोहपहचान
इन्द्रियवशग: को नहीं है आत्मा की बान

साकार रूप एकाग्रता भक्ति योग है नाम
शरीर मानों कर्मक्षेत्र मनु क्षेत्रज्ञ का भान

सत रज तम युक्त है गर्भस्थ ब्रह्म संज्ञान
पुरुषोत्तम योग नाम है सूक्ष्म दर्शन अभिराम

दैवी आसुरी प्रकृति का है आध्यात्म निपान
पूजा पद्धति सदा रही है भक्तिमय विज्ञान

गीता एक गूढ़ रहस्य आत्मा है एक जीव
एक दूजे से भिन्न नहीं दोनों ही एक जीव

जीवन नहीं मरण नहीं आत्मा है अविनाशी
क्षणभंगुर नाशवान है मनुज की देह विनाशी

परिवर्तन दिखे शरीर में आत्मा अपरिवर्तित
अजन्मा है अमरात्मा शाश्वत व अपराजित

न भौतिकता से क्षीण न वृद्धि का आवर्तन
न आत्मा की उपसृष्टि न आत्मा में परिवर्तन

शस्त्र से खण्डित नहीं न अग्नि से ज्वलित
जल गीला न कर सके वायु करे न शोषित

मायावादी भी असफल गूढ़ विषय परमात्मा
मोहमुक्त ही जान सके सनातन विभु आत्मा

शरणागत भगवान में आत्मा जब हो स्थित
कृष्णभक्ति में आसक्ति मन बुध्दि से प्रस्थित

कृष्णभक्ति है अन्तर्क्रान्ति चरमसिद्धि प्रदाता
शुद्धि में जो चित्त रमाता परमपद पा जाता

****

लाक्षागृह की राजनीति

भीष्म विदुर समर्थन से युधिष्ठिर ही युवराज बने
युधिष्ठिर थे प्रजासेवक दुर्योधन राजकोषाध्यक्ष बने

शकुनि और दुर्योधन असहाय शकुनि भरते आह
कर्ण के साथ कूटनीतिज्ञों ने की क्रूर गुप्त सलाह

पुरोचन से वारणावत में सुन्दर भवन बनवाया
लाक्षागृह का निर्माण कर भित्ति में लाख डलवाया

आग भड़काने वाले द्रव्यों को दीवार में चुनवाया
घृत तेल लाह की माटी से भित्ति को लिपवाया

सुषुप्त पाण्डवों का लाक्षाग्रह में अग्निकाण्ड होगा
पाण्डव भस्मीभूत हो जाएँगे मृत्यु का ताण्डव होगा

युद्ध नीति रीति से हो शकुनि को कर्ण ने समझाया
नष्टमति दुर्योधन कोप से धृतराष्ट्र के पास आया

हस्तिनापुरवासी करते नहीं नेत्रहीन पिता का आदर
युधिष्ठिर यदि राजा बनेंगे तय कुरुपुत्रों का निरादर

काका अनुज ने प्राप्त किया उत्तराधिकार में राज्य
नेत्रहीन होने के कारण अग्रज नहीं पाए थे राज्य

मैं राज सिंहासन चाहता हूँ ज्येष्ठ का मैं पुत्र हूँ
नियमानुसार ज्येष्ठ पुत्र मैं राज मुकुट के योग्य हूँ

पुत्र मोह में धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को वारणावत भेजा
पुरोचन को भी तीव्रता से गुप्त मंत्रणा कर भेजा

महल में पधारें पाण्डव जब कुन्ती को साथ रखना
आदर-सत्कार व मान का राजकीय ख्याल रखना

विश्वास हो जाए जब पांचों पाण्डव स्वप्न में खो गए
अग्निदाह कर देखना सारे चिरनिद्रा में सो गए

प्रजा समझे घर की आग में सारे के सारे जल रहे
किन्तु मृत्यु का कलंक और निन्दा मस्तक न गहे

ज्ञानी विदुर ने शकुनि की कुटिलता सहज पहचानी
कूटनीति राजनीति शीघ्र समझें संकेतों से ज्ञानी

वन की अग्नि से बचाव में रहे मूषक अपने बिल
युधिष्ठिर ने समझ लिया था खुला दिमाग और दिल

फाल्गुन रोहिणी की शुक्लाष्टमी प्रारम्भ हुई यात्रा
यथासमय वारणावत पहुँचे सम्पन्न हो गई यात्रा

दस दिन बाद पाण्डवों को नवीन गृह पहुँचाया
शिव भवन था वास्तव में पुरोचन ने अशिव बनाया

मन्द बुद्धि पापी पुरोचन दुर्योधन आज्ञा के अधीन
पाण्डवों को जीवित जलाना नृशंस हृदय विहीन

विदुर ने आगामी विपत्ति को पहले ही भाँप लिया
इस विषय में युधिष्ठिर को समय पूर्व सचेत किया

एक श्रमिक को दिया गया सुरंग खोदने का काम
कृष्णपक्षीय चर्तुदशी के दिन योग गमन अविराम

खनिक ने शीघ्र सुरंग खोदी परिश्रम से सायास
सुरंग प्रवेश मुख खोला युधिष्ठिर सिंहासन के पास

एक रात कुन्ती ने दानार्थ ब्राह्मण भोज कराया
पाँच पुत्रों संग भीलनी आई काल की जैसे माया

मदिरापान से मतवाली हुई पुत्र भी संग में मस्त
अग्निदाह से भील परिवार का सूर्य हो गया अस्त

अर्धरात्रि को भीम ने लगाई पुरोचन के कक्ष में आग
भवन अग्नि की लपेट में आया पाण्डव गए जाग

हाहाकार सा मच गया पुरवासियों के नयन उदास
पाण्डव अग्निदाह में मृत हुए निराश न्यास विन्यास

पाण्डव भी सारे दुखी हुए मात संग सुरंग मार्ग चले
अज्ञातवास को बढ़ गए गुप्त पहचान गुप्त मार्ग चले

****

शापित चने

एक असहाय निर्धन वृद्धा का भिक्षा से जीवन यापन
न भिक्षा न अन्न पाँच दिन जल पीकर जीवन यापन

प्रतिदिन मुख को गीला करके प्रभु नाम ले सो जाती
अगली भिक्षा में जो चने मिले प्रभात के लिए बचाती

रात हो गई राह में अब सुबह सबेरे खाऊँगी
प्रात:काल प्रभु भोग लगाकर मैं प्रसाद में खाऊँगी

बाँध चनों को रख दिया और वासुदेव का नाम लिया
जपते-जपते सो गई चोरों ने अपना काम किया

चनों की पोटली को देखा समझीं स्वर्ण मुद्राएँ
आहट सुनकर शोर मच गया आ पहुँचीं विपदाएँ

पोटली उठाकर भागे चोर पकड़े जाने के डर से
सांदीपनि मुनि के आश्रम छिपे सख्त दण्ड के भय से

इसी आश्रम में कृष्ण सुदामा प्राप्त कर रहे थे शिक्षा
देख गुरुमाता को भागे चोर छोड़ पोटली की भिक्षा

निद्राकुल वृद्धा ने जब जाना अपने चनों का किस्सा
दुर्भाग्य को कोसती रही लाचारी पर आया था गुस्सा

श्राप दे दिया उसी क्षण असहाय के चने जो खाएगा
जीवन में कभी न सुखी रहेगा वह दरिद्र हो जाएगा

प्रात:काल आश्रम में मिली वही पोटली गुरुमाता को
तुम दोनों का है यह भोजन पोटली दे दी सुदामा को

सुदामा जन्मजात ब्रह्मज्ञानी सारा रहस्य जान गए
अपनी गरीबी की मानसिकता पल भर में पहचान गए

त्रिभुवनपति श्रीकृष्ण ने खाया तो दरिद्र कहलाएँगे
तीनो लोक भी एक साथ श्राप से दरिद्र हो जाएँगे

मेरे जीते जी मैं ऐसा कभी अनर्थ न होने दूँगा
मेरे प्रभु दरिद्र हो जाएँ ऐसा कदापि नही करुँगा

सुदामा ने कृष्ण से छुपाकर सारा चना खुद खा लिया
शापित चने खाकर सुदामा ने दरिद्रता को ओढ़ लिया

अपने मित्र श्रीकृष्ण को शापित चनों से बचा लिया
त्रिभुवन की सम्पन्नता को दो मुट्ठी चनों से बचा लिया

अद्वतीय त्याग का उदाहरण सच्चे भक्त व मित्र सुदामा
चोरी-छुपे चने खाने का अपयश झेलते रहे सुदामा

****

संस्कारों का विधान

षोडश संस्कार का नियनम उत्तम संस्कारीलालन
उच्छ्रृंखलता परित्यागें करें धीर गम्भीर परिपालन

प्रथम संस्कार **गर्भाधान** ही उद्देश्य गृहस्थी पालन
शुभ मुहूर्त शुभ काल में प्रसन्नचित्त सन्तानोत्पादन

पुंसवन उत्तम पुत्रार्थ सीमंतोन्नयन से गर्भ संरक्षण
प्रथमसंपर्क है **जातकर्म** जीवनफलार्थ **नामकरण**

तेजस्विता संग विनम्रता सूर्यचन्द्र दर्शन **निष्क्रमण**
छठे मास रजत पात्र **अन्नप्राशन** शरीर चित्त घर्षण

चूड़ाकर्म मुण्डन आत्मोन्नति हेतु **विद्यारम्भ** प्रकरण
कर्णभेद यज्ञोपवीत से संयम संग देहव्याधि रक्षण

वेदारम्भ से ब्रह्मचर्य व्रत गुरु सानिध्य व ज्ञानार्जन
केशान्तकरण स्नातक उपाधि गृहस्थ **प्रवेशप्रवर्तन**

वैदुष्य प्राप्त कर गुरु आश्रम से पितृगृह **समावर्तन**
परिपक्वता क्षमता वृद्धि के अनन्तर **विवाह** बन्धन

अंत्येष्टि संस्कार है विधिवत अन्तिम कपालकरण
बन्धनमुक्त देह नश्वर अनश्वर अमरात्मा का स्मरण

दम्पत्ति का धर्म है अधिष्ठानयुक्त संस्कारित संतान
सम्बन्ध हों भावनात्मक आध्यात्मिक वैश्विक मान

****

कार्तिकेय जन्म

दक्ष के यज्ञ में शिव की सती कूदकर जब भस्म हुईं
शिवजी विलाप करने लगे गहरी तपस्या प्रारम्भ हुई

शिव विलाप से सारी सृष्टि शक्तिहीन सी हो गई
दैत्य अवसर का लाभ उठाएँ धरती गतिहीन हो गई

तारकासुर का आतंक फैला क्रूरता भी बढ़ गई
हाहाकार सा मच गया देवताओं की शक्ति घट गई

देवता परास्त एक दैत्य से मुश्किल की घड़ी अनन्त
ब्रह्मा का वरदान है शिवपुत्र करेगा तारक का अन्त

भगवान शिव के पास पहुँचे इन्द्र वरुण सब देव
शिवपुत्र का वरदान सुनाकर शिव जाप करें सब देव

भगवान शंकर गौरी के अनुराग की लेने लगे परीक्षा
पार्वती की तपस्या से प्रसन्न समाप्त उनकी प्रतीक्षा

शुभ घड़ी शुभ मुहूर्त में शिव पार्वती का विवाह हुआ
पिशाच भूत प्रेत के संग शिव विवाह सम्पन्न हुआ

जटा में गंगा कण्ठ भुजंग लपेटे डमरू शोभित हाथ
शिवरूप अनुपम लग रहा था भस्म श्रृंगार के साथ

यक्ष किन्नर गंधर्व बाराती अद्भुत ऐश्वर्यमय परिणय
गौरी संग विवाह रचा शुभ उद्देश्य विनय अनुनय

नियत समय पर माँ गौरी का गर्भाधान संस्कार हुआ
पुराणानुसार षष्ठीतिथि को कार्तिकेय का जन्म हुआ

पृथ्वी की शक्ति के हेतु एक कार्तिकेय का ही ध्यान
तारकासुर का वध करते ही देवों को मिला अव्यान

उत्तर कुरुक्षेत्र और अरब में यजीदी जाति के देव हैं
अन्य नाम सुब्रमण्यम मुरुगन व स्कन्द इष्टदेव हैं

षष्ठी तिथि के दिन उनके पूजन का है महत्त्व
कार्तिकेय की विशेष अर्चना से प्राप्त करें देवत्व

****

एकदन्त

ब्रह्मवैवर्त पुराणानुसार विष्णु के अवतार थे परशुराम
शिवशिष्य ऋषि व पितृभक्त गणेश करते न विश्राम

परशुराम आराध्य शिव और पार्वती के दर्शन को गए
नीलकण्ठ कैलाशवासी के धाम कैलाश पर्वत पर गए

भगवान शिव शयन में थे और पहरे पर स्वयं गणेश
निद्रा भंग का दोष लगेगा परशुराम का अति आवेश

परशुराम का क्रोध अनियन्त्रित गणेश से विवाद हुआ
गणेश को धक्का दिया और प्रवेश का प्रयास किया

गणेश भी क्रोध में आए पर विप्र का सम्मान किया
प्रहार के बदले विप्र को सूंड से चारों धाम घुमा दिया

गणपति ने परशुराम को दिव्यरूप के दर्शन करवाए
कुछ पल तो ऋषि शान्त रहे मन अपमान भान कराए

अपमान न सह सके फरसे से गणेश पर प्रहार किया
फरसा शिव साधित अस्त्र था गणपति ने मान किया

वार विफल जाए नहीं वार को एक दाँत पर झेला
वार से दाँत आधा टूट गया विवाद से बढ़ा झमेला

कोलाहल से शयन भंग हो गया वृथा गणपति की सेवा
शान्त किया शिष्य व पुत्र को मोदक से किया कलेवा

एक त्रुटित दन्त के कारण गणेश एकदन्त कहलाए
पितृभक्ति के कारण वह आदर्श पुत्र भी कहलाए

****

शिव माहात्म्य

रावणकृत सामवेद अंकित शिव ताण्डव स्तोत्रमय
शनि है यदि कालमय त्रिलोकी शंभु महाकालमय

सप्तदश स्तोत्र का हो नित पठन पाठन सिद्धिमय
विश्वास हो उत्कृष्ट जीवन व्यक्तित्व पूर्ण प्रकाशमय

जटागंग कंठ भुजंग माला कर डमरू कल्याणमय
बालचन्द्र सुशोभित कृष्ण केश प्रतिमा है पितृमय

आनन्द वदन कृपानिधान उदात्त भाल है सृष्टिमय
माणिक्य आभा सर्प की शोभा चहुँ दिश रश्मिमय

पदपीठ पुष्प सुरमौलि वाले अञ्जलि धन धान्यमय
शिवाग्नि ज्वाला कामदेव हत कृपा शंभु ऋद्धिमय

अम्बा प्रकृति शिव चित्रकार हो तूलिका वरदानमय
रुद्र शिव विष कण्ठ सोहे अमावस्या ज्यों रात्रिमय

मुण्डमाल त्रिलोक भर्ता यमराज वशीकृत मृत्युमय
साष्टांग ताण्डव ज्वलित मुद्रा ढक्काध्वनि मृदंगमय

डमरू जनित हैं नाद चतुर्दश माहेश्वर समभावमय
करबद्ध हैं दर्शनाभिलाषी हर गीत आरत छन्दमय

स्फटिकसमान उज्ज्वल रूप शिव साक्षात धर्ममय
सर्वांग सुन्दर वृषभ नन्दी दूल्हे की सवारी प्रेममय

शिव परिणय में बाराती पिशाच यात्रा प्रेतमय
यक्ष किन्नर गंधर्व के संग बारात अद्‌भुत ऐश्वर्यमय

दूल्हावेश रुद्र शिव की अप्रतिम शोभा तेजमय
पवित्र दिव्य बारात का हिमालय प्रयाण ओजमय

डमरू की डमडम गड़गड़ भेरी धुन सुनादमय
ढक्का ध्वनि और शंख का गंभीर नाद माधुर्यमय

गीत नृत्य कणन रणन की मंगल ध्वनि संगीतमय
शुभ निनाद से सुशोभित त्रिलोक गुंजित काव्यमय

बिल्वपत्र भाए राख लगाए मंडप सजा है गौरमय
नन्दी सवारी हों गण बाराती धतूराभाँग आहारमय

आनन्ददाता समाधि मुद्रा सौन्दर्य आभा परागमय
शुभ मंगला हरतालिका शिव परिणय शिवमन्त्रमय

ध्यान केंद्रित मन्त्रोच्चार गूँजे भक्त शिव एकात्ममय
शिव ताण्डव गान गाएँ जीवन मधुर हो लक्ष्मीमय

स्मरण ध्यान वर्णन श्रवण फल श्रद्‌धा विश्वासमय
लौकिक बन्धन सारे कटें मुक्ति मिले परमधाममय

****

समुद्र मन्थन

दुर्वासा के श्रापवश इन्द्र को कष्ट ही कष्ट भोगने पड़े
दैत्यराजबलि भी उसी समय देवलोक जीतने को खड़े

दैत्यराज की धृष्टता से सभी करें विमर्श एक ही बान
स्थिति निवारण के लिए भगवान विष्णु ही यजमान

विष्णु की कृपा से संभव देवों गन्धर्वों का कल्याण
क्षीरसागर में समुद्रमन्थन का अमृत कलश प्रमाण

समुद्र तल में दिव्य पदार्थ हैं अमृत का गुप्त खजाना
अमृतपान से मृत्यु पराजित गुणियों ने ऐसा माना

समुद्रमन्थन की तैयारी विष्णु की माया का खेल
देवगण सन्धि प्रस्ताव रखें दैत्य बलि से करके मेल

अमृतपान का लोभ संवरण न कर पाया दैत्यपति
समुद्रमन्थन क्रिया में हुआ तत्पर बलि असुराधिपति

मंदराचल को स्थापित किया नेती वासुकिनाग सहाय
अमृत हेतु सुर असुर भिड़े पुरजोर शक्ति लगाय

विष्णु के कच्छपावतार की आदि शक्ति ने लीला रची
सृष्टि संचालन के लिए समुद्रमन्थन की एकांकी रची

खूब मथा देवों दैत्यों ने रत्नाकर का अतुल घनत्व
दोनों के मध्य विभाजित हुआ चौदह रत्न प्रभुत्व

समुद्रमन्थन में सर्वप्रथम कालकूट **हलाहल** निकला
हलाहल से तीव्र तापत्रय असाधारण संवेग निकला

भगवान शिव ने गरलविष को मुँह में अपने भर लिया
इस हलाहल को कण्ठ में ही स्थिर करके रख लिया

हलाहल के वेग से शिव का कण्ठ नीला पड़ गया
जटागंग कण्ठ विष धारा नीलकण्ठ नाम पड़ गया

दूजे रत्न में श्वेत वर्ण के **उच्चैःश्रवा** को बिलो लिया
सप्तमुख अश्वराज को बलि असुरराज ने संजो लिया

ऐरावत श्वेत हाथियों का राजा इन्द्र का वाहन बना
कौस्तुभमणि विष्णु के भाल प्रचण्ड ताप सावन बना

लोककल्याण हेतु **कामधेनु** माता ऋषियों को दी दान
कल्पद्रुम देवेन्द्र के सुरकानन स्वर्गलोक अभिमान

रत्नरूप देवी **लक्ष्मी** ने श्रीपति विष्णु का वरण किया
इन्द्र ने **अप्सरा रंभा** को राजसभा में विभूषित किया

पारिजात वृक्ष की उत्पत्ति समुद्रमन्थन की सौगात
धन की देवी वरलक्ष्मी का पारिजात सुगन्धित गात

वारुणी देवी **मदिरा** को असुर प्रजाति को दिया गया
पाञ्चजन्य **शंख** को प्रभु नारायण ने स्वीकार किया

चन्द्रमा जल का कारक ग्रह उत्पत्ति जल से ही मानी
शिव मस्तक पर स्थान मिला अप्रतिम भाग्य कहानी

भगवान **धन्वन्तरी** विष्णु के अंश आर्युवेद के जनक
अवतरण के बाद से ही लोक कल्याण की रही महक

प्रकृति निर्मित उत्पादों से स्वास्थ्यप्रद आर्युवेद बनाया
ऋषि-मुनियों और वैद्यों को इस ज्ञान के योग्य बनाया

समुद्रमन्थन के अन्तिम चरण में प्रगटा **अमृत** कलश
धन्वन्तरि देव ही प्रगटे हाथों में लेकर सोम कलश

देवताओं दैत्यों के बीच बढ़ा अमृत कलश विवाद
विष्णु ने मायामोहिनी रूप में किया कामुक संवाद

राहु ने निज छल बल से अमृत का रसपान किया
क्रोधित होकर विष्णु ने चक्र से शीश को काट दिया

राहु और केतु उसी देह के सूर्य चन्द्र ग्रहण कारक
समुद्रमन्थन क्रिया पृष्ठभूमि थी देव हित परिचायक

****

दशावतार की अवधारणा

ग्लानि धर्म की जब होती पतित नीति आचार
काल चक्र प्रभु लीलामय **हरि के दस अवतार**

हरि दर्शन से सत्यव्रत को हुआ बोध सुविचार
प्रलय काल में जनसंरक्षण प्रभु **मत्स्य** अवतार

समुद्र मंथन में श्री विष्णु मंदराचल के आधार
वासुकी नाग बने थे नेती वे **कच्छप** अवतार

जल मग्न धरा घनघोर तमस प्रलय के आसार
दन्त थूँथन से वसुधा उठाई ले **वाराह** अवतार

हृण्याकश्यप अभिमानी प्रह्लाद भक्त साकार
नरसिंह आविर्भूत खम्भ से अजब था अवतार

प्रतापी बलि से स्वर्ग हारकर देवेन्द्र करें पुकार
तीन पग का वरदान माँगा हरि **वामन** अवतार

राक्षस मुक्त किया त्रेतायुग लिया **राम** अवतार
श्री गीता का उपदेश दिया **कृष्ण** रूप अवतार

विनाश दर्प का करने आए **परशुराम** अवतार
अहिंस्य मार्ग उपदेश दिया ले **बुद्ध** रूप अवतार

कलियुग सतयुग सन्धिकाल में **कल्कि** अवतार
अनृत अधर्म से मुक्त रहें धारें सतयुगी विचार

****

विष्णु का मत्स्यावतार

सृष्टि की प्रलय से रक्षा हेतु श्रीविष्णु का मत्स्यावतार
कृतयुग में महाराज सत्यव्रत का प्रजा हित उपकार

राजा सत्यव्रत ने नदी में जब उदकाञ्जलि भरी
उनकी अञ्जलि में आई एक छोटी सी मछली डरी

पुनश्च सागर प्रवाह में जीना मीना भय से कातर थी
बड़ी मछलियाँ खा जाएँगी अनुनय मौन ही आखर थी

सत्यव्रत ने मत्स्य को निज जल कमण्डल रख लिया
मछली किशोरी हो गईअब सरोवर प्रवाहित कर दिया

देखते ही देखते मत्स्य वह सौन्दर्यपूर्ण युवा हो गई
अपलक देखते रहे राजा साक्षात् उठ खड़ी हो गई

समझ गए थे अब राजा यह साधारण जीव नहीं है
मीना से की प्रार्थना यह वास्तविक स्वरूप नहीं है

प्रार्थना सुन साक्षात् चतुर्भुज भगवान विष्णु प्रकट हुए
सोद्देश्य मत्स्यावतार लेकर मत्स्य रूप में प्रकट हुए

प्रलय तय है सप्ताह बाद और तुम बनोगे सूक्ष्म जीव
मुझसे प्रेरित एक विशाल नाव को तुम पाओगे सजीव

सप्तर्षियों औषधियों व बीजों को साथ ले चढ़ जाना
प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को साथ लेकर बढ़ जाना

भंवर में हिचकोले खाए नौका मैं अवतार में आऊँगा
विशालकाय मत्स्य के रूप में मैं रक्षक बन जाऊँगा

वासुकि नाग की आज्ञा से नौका का बंधन बाँध देना
मत्स्य के शीश पर उगे विशाल विषाण से बाँध देना

प्रश्न पूछने पर मैं उत्तर में अपनी महिमा का ज्ञान दूँगा
परब्रहम विख्यात रूप सबके उरप्रदेश में भर दूँगा

मत्स्यरूपधारी विष्णु ने राजन को दिया दिव्य श्रवण
पूर्वजन्मफल से राजा बने तत्वज्ञान उपदेश प्रवण

मत्स्यपुराण में मत्स्यावतार की वर्णित प्रसिद्ध कथा
नियति नियोजित अवतार से दूर सृष्टि प्रलय व्यथा

****

कच्छपावतार

धर्मग्रन्थों के अनुसार विष्णु ने कच्छप अवतार लिया
समुद्र मन्थन एक पृष्ठभूमि चौदह रत्नों को धार लिया

महर्षि दुर्वासा ने इन्द्र को जब श्राप से श्रीविहीन किया
इन्द्र को श्रीविष्णु ने तब चर्चा कथन में प्रवीण किया

इन्द्रदेव असुर और देव एक साथ एकमत हो गए
समुद्र मन्थन से लाभ के लिए सारे सहमत हो गए

देव और दैत्यों ने मिलकर मंदराचल को उठा लिया
मंदराचल समुद्र तट पर रखा आशीष बल जगा लिया

देवताओं दैत्यों ने गिरि को समुद्र में स्थापित किया
वासुकिनाग मंथन की नेती प्रणमाञ्जलि अर्पित किया

समुद्र मंथन के लिए मंदराचल पर्वत बने मथानी
नागराज वासुकि नेती बने और मथने लगी मथानी

आधार न होने के कारण मंदराचल होने लगा जलमग्न
आधार बना विष्णु का कूर्मरूप मंथन के शुभ लग्न

विशालकूर्म की विशालपीठ पर मंदराचल घूमने लगा
नागराज की रस्सी से मथकर श्री रत्नों को मथने लगा

समुद्र मन्थन सम्पन्न हुआ श्री लक्ष्मी का वरदान मिला
अमृतघट ले मोहिनी रूप में विष्णु का अनुदान मिला

****

वाराह और जलमग्न धरा

दैत्य हिरण्याक्ष ने जब पृथ्वी को समुद्र में छिपा दिया
ब्रह्मा नासिका जात विष्णु ने वाराहरूप अवतार लिया

विष्णु के इस रूप की देवगण ऋषि-मुनि करते स्तुति
आग्रह पर भगवान वाराह ने पता की पृथ्वी की स्थिति

पृथ्वी का पता लगा लिया थूथनी से ली दीर्घ उच्छ्वास
समुद्र तल से पृथ्वी उबारी दन्तथूथन पर वसु पुनर्वास

हिरण्याक्ष दैत्य ने ललकारा और विष्णु से युद्ध हुआ
वाराह और हिरण्याक्ष युद्ध में पापकर्म का वध हुआ

हिरण्याक्ष का वध करके पृथ्वी लोक का उद्धार किया
खुरों से जल स्तम्भित करके पृथ्वी को स्थापित किया

भगवान वाराह के संग अवतरित धरा पर वाराही माँ
वाराह रूप से पृथ्वी पर जीवन मंगल पर वाराही माँ

वाराह रूप थे स्वयं नारायण माँ वाराही थीं लक्ष्मी
लीला करके क्षीरसागर लौटे लक्ष्मीपति और लक्ष्मी

****

नृसिंह अवतार

दैत्यराज हिरण्यकशिपु स्वयं को सर्वशक्तिमान मानता
शक्तियों के कारण भगवान से अधिक बलवान मानता

न देव मनुष्य न पक्षी पशु वरदान था कोई न मार सके
न दिन रात धरती आकाश न अस्त्र शस्त्र ही काट सके

उसके राज्य में विष्णु पूजा मान्य दण्डनीय अपराध
भक्तों को दण्ड दिया जाता था उच्छ्रंखल और निर्बाध

हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद था जो विष्णु भक्त
बाल्यकाल से भगवान श्रीहरि की भक्ति में आसक्त

हिरण्यकशिपु को ज्ञात हुआ तो हुआ बहुत ही क्रोधित
प्रह्लाद को समझाया बहलाया भक्त विष्णु पर मोहित

भक्त प्रह्लाद नहीं माना तो मृत्युदण्ड ऐलान किया
भगवान विष्णु की भक्ति ने हर बार जीवनदान दिया

बुआ होलिका को आग से न जलने का आशीष मिला
प्रह्लाद को ले अग्निशिखा में बैठने का आदेश मिला

अग्निरक्षकवस्त्र लिपट गया भयंकर हवा बनी कारक
विष्णु माया से होलिका जली वरदान रक्षित पावक

वन में फिर छोड़ दिया कुन्जर के पाँव कुचलवाया
विष्णु जाप की शक्ति भारी रक्षक से भक्षक मिटवाया

सतयुग की कथा स्मरण ग्राह ने गज को जकड़ लिया
आर्त्तगज ने हरि प्रार्थना की ग्राह शीश को काट दिया

भक्त प्रह्लाद को मारने जब हिरण्यकशिपु उद्धत हुए
श्री विष्णु नृसिंह अवतार में खम्ब फाड़कर प्रकट हुए

हिरण्यकशिपु का वध किया न नर न देव रूप लिया
अस्त्र शस्त्र भी नहीं लिया पैने नाखूनों से फाड़ दिया

हिरण्यकशिपु का वध किया श्री विष्णु नृसिंह अवतार
भक्त व भक्ति की पराकाष्ठा विष्णु की माया अपरम्पार

****

विष्णु वामन अवतार

सतयुग में प्रह्लाद के पौत्र दैत्यराज बलि ने जन्म लिया
बल और शक्ति प्रयोग से स्वर्ग पर अधिकार किया

सत्य और धर्म के लिए विष्णु ने वामन अवतार लिया
देवों को पुनः स्वर्गलोक का आधिपत्य प्रदान किया

असुरराज बलि की यज्ञशाला वामन विष्णु दुःखहर्त्ता
तीन पग धरती दान में माँगी राजा बलि दानकर्त्ता

बलि के गुरु श्री शुक्राचार्य ईश्वर की लीला समझ गए
दान न देने को समझाया उलट फेर सब भाँप गए

वामन को तीन पग दान का बलि ने संकल्प किया
वचनबद्ध होकर बलि ने कृत संकल्प को पूर्ण किया

विशालकाय विष्णु ने तब एक पग में धरा को नापा
दूसरे पग में अपनी माया से स्वर्गलोक को नापा

तीसरा पग रखने के लिए नहीं बचा जब कोई स्थान
भगवान वामन को दे दिया निज मस्तक शीर्ष स्थान

शीश पर विष्णु स्पर्श से पहुँचा बलि गहरे सुतललोक
दानी वचनपरायण दैत्यबलि बना स्वामी सुतललोक

श्रीविष्णु ने वामन अवतार में देवों का देवत्व लौटाया
छोटे कद और विशाल पग में स्वर्गलोक पुन: लौटाया

****

त्रेता में राम

लंकापति दशानन का आतंक त्रेतायुग में बढ़ गया
देवता भी डरने लगे ऋषि मुनि का भय भी बढ़ गया

उसके वध के लिए विष्णु ने राजा दशरथ को चुना
अपने गर्भ से पुत्र रूप में माता कौशल्या ने जना

वाल्मीकि व विश्वामित्र ऋषि राम के धर्म व कर्म गुरु
अस्त्र शस्त्र संचालन शिक्षा कैकेयी भी नीति गुरु

अमोघ अस्त्र दिया ब्रह्मा ने और नीलकण्ठ ने शक्ति
मतंग ऋषि और भारद्वाज ने अचूक अस्त्रों की शक्ति

इस अवतार में श्री विष्णु ने राक्षसों का वध किया
मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर राम ने सौजन्य अवध किया

पिता का वचन निभाने को राज्य छोड़ वनवास सहा
वनवास में पत्नी सीता का दुरुह असह्य विछोह सहा

सीता का हरण हुआ लंका दक्षिण समुद्र के पार
अशोक वाटिका में एकाकी नैन अँसुवन की धार

एक दशानन के अभिमान से राक्षसकुल मारा गया
श्री राम रावण युद्ध में लंकापति भी मारा गया

भगवान विष्णु ने त्रेतायुग में श्री राम अवतार लिया
राक्षसों के घोर आतंक से देवताओं को मुक्त किया

****

द्वापर में कृष्ण अवतार

द्वापरयुग में भगवान विष्णु ने श्री कृष्ण अवतार लिया
धर्म की संस्थापना और अधर्मियों का नाश किया

भगवान कृष्ण के जन्म का कारागार ही बना वितान
जनक वसुदेव जननी देवकी की यह अष्टम सन्तान

यशोदा व नन्दबाबा के गाँव गोकुल में पालन हुआ
बकासुर पूतना का वध किया कुब्जा का उद्धार हुआ

त्याज्य पीड़ित नारियों को परिणय से अपना लिया
गोवर्धन और गऊ पूजा से इन्द्र का गर्व हनन किया

श्रीकृष्ण ने इस अवतार में अधर्मियों का नाश किया
क्रूरकर्मा मामा कंस का वध भांजे श्री कृष्ण ने किया

कुरुक्षेत्र में पार्थ के सारथि बने मोहनिद्रा को दूर किया
अर्जुन को उपदेश देकर आत्म अनात्म का ज्ञान दिया

युधिष्ठिर को सिंहासन देकर सत्य को उरप्रदेश किया
भौतिक विषयों के त्याग का आध्यात्मिक संदेश दिया

भगवान विष्णु का ये अवतार है सभी अवतारों में श्रेष्ठ
श्री कृष्ण सर्वोच्च सत्ता हैं बालरूप दर्शन सर्वश्रेष्ठ

****

परशुराम अवतार

हरिवंशपुराण में वर्णित है महिष्मती नगरी शक्तिशाली
हैहयवंशी क्षत्रिय कार्तवीर्य सहस्त्रबाहु राजा बलशाली

यमदग्निपुरम् में यमदग्नि ऋषि गहन तपस्या में लीन
आसुरी प्रवृत्ति कार्तवीर्य ने राज्य शान्ति ली छीन

यमदग्नि ऋषि ने अग्निदेव को साक्षी मानकर कहा
कार्तवीर्य के अनैतिक कर्म को अब तक बहुत सहा

अभिमानी और अत्याचारी से अग्निदेव का आग्रह
सुरुचि भोज के लिए कार्तवीर्य अर्जुन से अनुग्रह

सहस्त्रबाहु ने गर्व से कहा है चहुँ ओर मेरा ही राज
चाहें जहाँ भोजन कर लें महिष्मती का मैं सरताज

अग्निदेव ने वनों को जलाया और किया अशन विनाश
ऋषि आपव तपस्यारत थे दिव्य चक्षु दृष्टिगत नाश

क्रोधित हो ऋषि आपव ने प्रण किया सहस्त्रबाहु नाश
विष्णुजन्म परशुराम रूप में क्षत्रिय कुल लक्ष्य विनाश

सहस्त्रबाहु सम क्षत्रियों का भार्गवकुल कृत सर्वनाश
विष्णु पञ्चम सुत यमदग्नि के उद्देश्य क्षत्रियों का नाश

कर्मभूमि व तपोभूमि जौनपुर आदि गंगातट की भूमि
जमैथा गाँव जन्मभूमि गोमती प्रवाहित पावन भूमि

महर्षि यमदग्नि का आश्रम दर्शन करें खास और आम
यमदग्निपुरम् प्राचीन नामकरण आज जौनपुर नाम

परशुराम को शिव शंकर से साधित फरसा ईश मिला
आसुरी प्रवृत्ति क्षत्रिय दमन पिता का आदेश मिला

क्षत्रियों का समूलनाश चाहते तो राम को धनुष न देते
दशानन का वध न होता यदि अपना गांडीव न देते

शस्त्र व शास्त्र का अद्भुत समन्वय परशुराम में लक्षित
विष्णु के अवतार विशिष्ट ओज तेज परिलक्षित

****

बारहवीं शती के बुद्ध

धर्मग्रन्थों के अनुसार बारहवीं शती के अवतार बुद्ध
भगवान विष्णु के ही अवतार थे अहिंस्य मार्ग प्रबुद्ध

जब आशा से अधिक बढ़ गई असुरों दैत्यों की शक्ति
देवता भी भय से भागते फिरे नहीं मिल सकी मुक्ति

राज्यविस्तार की कामना से दैत्यों ने पूछा युक्त उपाय
साम्राज्य में स्थिरता हो संभव दैत्य चतुर निकाय

इन्द्र ने शुद्ध भाव से कहा सुस्थिर शासन आवश्यक
यज्ञ व वेदविहित व्यवहार शासक चित्त आवश्यक

वैदिक आचरण व यज्ञ के प्रति दैत्यगण जाग्रत हुए
दिन प्रतिदिन शक्ति बढ़ी वातावरण आचरण शुद्ध हुए

सभी देवताओं ने डरकर भगवान विष्णु का ध्यान किया
भगवान विष्णु ने देवहितार्थ बुद्धरूप धारण किया

अत्यधिक विरोध के बाद भी यज्ञ में पशु बलि हिंसा
अग्नि धूम से मृत होते प्राणी हिंसा विपरीत अहिंसा

बुद्ध दैत्यों के पास पहुँचे एक नया उपदेश दिया
यज्ञफल बेकार है यदि जीवन के बदले क्लेश दिया

बुद्ध के अहिंसा उपदेश से दैत्य कुल प्रभावित हुआ
यज्ञ और वैदिक आचरण तत्काल प्रतिबंधित हुआ

वैदिक आचरण समाप्ति से दैत्यों की शक्ति क्षीण हुई
देवों को निज अधिकार और यश की पुन: प्राप्ति हुई

अथर्ववेद में बुद्ध को भगवान का अवतार ही माना
उनके उपदेश भी शाश्वत नैतिक मूल्यों का ख़ज़ाना

गीतगोविन्दम् के प्रथम सर्ग में दशावतार का वर्णन
जयदेव कृत बुद्धावतार की साम स्तुति का वर्णन

****

कल्कि की प्रतीक्षा

श्री विष्णु का कलि में होगा कल्कि रूप अवतार
कलियुग सतयुग संधिकाल में होगा ये दसवाँ अवतार

बद्रीनाथ-केदारनाथ के रूठने का पुराणों में है वर्णन
केदार घाटी के दो पर्वत नर और नारायण का वर्णन

नर और नारायण पर्वत जब आपस में मिल जाएँगे
बद्रीनाथ मार्ग अवरूद्ध होगा तीर्थाटन न कर पाएँगे

स्वर्ग अपवर्ग की गंगा मैली भोगे जन जन दुष्परिणाम
मानवगत बेपरवाह स्वभाव को दूर से करो प्रणाम

स्वर्ग लौट जाएगी गंगा परिणाम भोगेगा पूरा जम्बूखण्ड
गंगातट पर तीर्थस्थल सारे रह जाएँगे खण्ड खण्ड

आर्षग्रन्थों की प्रासंगिकता पर आज विज्ञान करे शंका
तुच्छ बुद्धि को शाश्वत माने ईश्वर की सत्ता पर शंका

तब हरि जन्मेंगे पुत्ररूप श्वेत अश्व पर होकर सवार
धर्म की पुनर्स्थापना करेंगे पाप का अन्त पुण्य प्रसार

जीवों के उद्धार के लिए ब्रह्माण्डीय कल्कि अवतार
धर्मस्थापना का प्रतीक होगा हरि का कल्कि अवतार

****

सतयुग का नव प्रभात

शुकदेव रचें भागवत पुराण में कलिकाल समाचार
तड़प कर सच्चाई रोई देखो झूठों का राज दरबार

सनातन ऋषि परम्परा पुराणोल्लिखित युग हैं चार
बीत गए सतयुत त्रेता द्‌वापर अब कलियुग की मार

सत्यं शिवं सुंदरं कल्पना चतुर्गुणित युग में साकार
त्रेता त्रिगुणित द्‌विगुणित द्‌वापर राम कृष्ण अवतार

कलियुग आया शास्त्रविमुख नर नहीं धर्म का सार
जीवन पूर्ण बनावटी पर्युषित कटु विदाहीन आहार

असत्य अनाचाररत पुरुष भटके गृहस्वामिनी नार
बाह्‌याकर्षण सिरमौर हुआ मनसौन्दर्य हीन नर नार

समझौते पर टिका सनातन पवित्र विवाह संस्कार
अपने सभी पराए होते उपनिषदों की यह दरकार

कलियुग में हिंसा लोभ दृष्टिगत चलित देह व्यापार
कपूत पिता पर लाञ्छन मँढ़ता पिता पुत्र पर वार

अनीति कुसंग गद्‌दार चढ़े सिर कलियुग के जो यार
न्याय व्यवस्था लचर बिक जाती खुले आम बाज़ार

महाभारत के वनपर्व में हैं संकेत कलिकाल हज़ार
कलियुगी गगन में द्‌वादश सूर्य से प्रचण्डताप संहार

बंजर धरती शुष्क खेत खलिहान सूखे की हो मार
सप्तसिंधु सरित् दरिया भी सूखे तलहट पड़ी दरार

त्राहि त्राहि का चीत्कार मचा है देस परदेस हरद्वार
नहीं अन्त ये विपदाओं का ये प्राकृतिक बहिष्कार

जल मग्न धरा द्वादश संवत्सर कल्कि का अवतार
पुण्यात्माएँ विष्णुमाया से जाग्रत पुन: सृष्टि संचार

हो सत्य धर्म संस्थापना दया दान तप का व्यवहार
आए सतयुग का नव सूरज रक्ताभ प्रभात श्रंगार

****

नाम- श्रीमती रंजना श्रीवास्तव

पति- श्री राजीव श्रीवास्तव

जन्मतिथि- २७ अक्टूबर

जन्मस्थान- प्रयागराज

निवासस्थान- C-११०२ जयन्ती नगरी ५,
बेसा, मनीष नगर, नागपुर,
महाराष्ट्र - ४४००३४

मो.- ९०६६८०८१६१

ईमेल- srivastavaranjana9@gmail.com

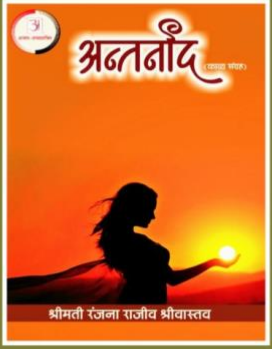

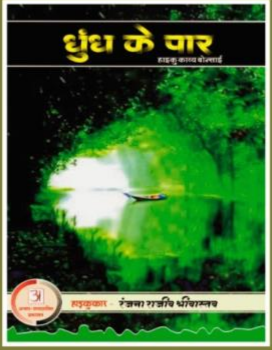

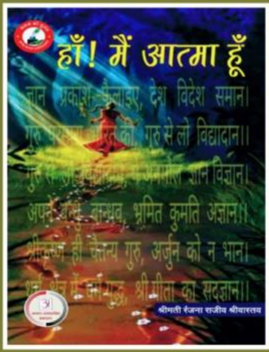

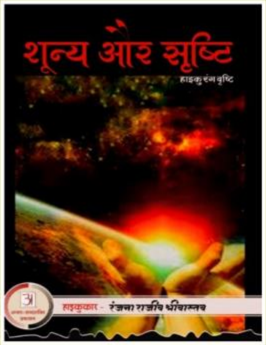

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो. - 9424765259, ईमेल - antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-251-7

मूल्य 250/-